

① क्षेत्रिया गायत :-

- ↳ राज० का राजगीत
- ↳ राज० का राजवाड़ी गीत
- ↳ विद्युत गीत
- ⇒ माँ जामत छोली में गाया।
- ↳ जीतलसेर
- ⇒ सर्वप्रथम जाने वाली - मोहरी बाई (उदयपुर)
- ⇒ सर्वाधिक जार जाने वाली - अल्लाह जिलाह बाई (बिकासीर)
 - ↳ १९४२ई० - पट्टम शही पुस्तकार
 - ↳ १९०३ई० - राज० रत्न पुस्तकार
(मरणोपरान्त)

उत्तम मॉड गायिकाओं :-

- ↳ गवरी बाई
- ↳ स्व. गवरी देवी
- ↳ छन्दो भेम
- ↳ जमीला लाली

(२) कुरजाँ गीत :-

- ↳ मरवाइ कीजे का लोक गीत
- ⇒ विरही रुदी द्वारा कुरजाँ पक्षी के माध्यम से परवेश जह पति की संदेश भेजते समय कुरजाँ गीत गाया जाता है।

Note:- कुरजाँ व्यापक रूप से लोकगीत का विचारणा गाये (जीधपुर)
में पाया जाता है।
⇒ कुरजाँ द्वितीय अफगानिस्तान का पक्षी है।

(३) सुभट्टीं गीत :-

- ↳ मेवाइ कीजे का लोकगीत
- परदेश
- ⇒ गविं जमिजाति की महिलाओं द्वारा सुख्खा जह पति के पास आकर्ता तोते के माध्यम से संदेश भेजते समय सुवर्णी गीत गाया जाता है।

Note:- उद्वट्टीं - महिलाओं के गले का आङ्कड़ण

(४) काण्ड गीत :-

- ⇒ पलि छोरा-छस गीत के माध्यम से काण्डे को लोबोधित करते हुए पुति के बोपाल लौटी का स्पृह नमाया जाता है।

(५) मीरिया :-

- मीर गीत देसी लड़की द्वारा गंभा जाता है जिसकी स्वर्गाई से गहर है लेकिन दाढ़ी हीने में छिलाल है।

(६) तोरणियी :-

लाइके द्वारा शही से झूर्छ गाया जाने वाला गीत।

(7) हिंसकी जीत :-

बाह्यर/ सीवातं क्षेत्र का लोकप्रीति

⇒ किसी की गाँव आदि पर हिंसकी जीत गाया जाता है।

(8) विद्युक्ती जीत :-

बांडी क्षेत्र का लोकप्रीति

⇒ विद्युक्त द्वारा कर्ते जाने पर उनकी मरने से फले बस जीत के माध्यम से अपने पति की इच्छा विद्युक्त करते का संदेश होता है।

(9) स्त्रीता :-

जैसलमीर क्षेत्र का विद्युत जीत

⇒ बस जीत के माध्यम से पति परदेश गए पति की भाव जरती है एवं वापस लौटी की जरती है।

(10) मूमला जीत :-

जैसलमीर का शृंगारिक जीत

⇒ बस जीत में लौटा (जैसलमीर) की राजकुमारी मूमल के नवविवाह (लैन्डर्फ) का

बर्नन किया जाता है।

Note:- (i) मूमल, अमरकोट (Pak.) के बालक मैट्टक से प्रेम करती है तथा:

बनकी प्रेम कहनी बाजहायन में प्रसिद्ध है।

(ii) मूमल का सर्वाधिक चित्रण जैसलमीर बैली में किया जाता है।

(iii) मैट्टक - मूमल का चित्रण जीधपुर बैली में किया जाता है।

(11) पीपली :-

पीपल का द्वीय स्तर पीपली रखता है।

⇒ मरवड एवं कीचावाठी क्षेत्र का विद्युत जीत।

⇒ दीर्घी तीर्थ (श्रवण शृङ् तुरीया) के अवलोक पर विद्युती द्वारा पीपली की सम्बोधित करते हुए परदेश गए पति की भाव में भट्ट जीत गया जाता है।

(12) पर्वेशा जीत :-

⇒ वर्ण अद्यत / सावन के महिने में पर्वेशा पक्षी को लम्बोधित करते हुए गाया जाने वाला जीत।

⇒ बस जीत में प्रेमिका द्वारा विवाहित पुरुष की अटकाने का प्रमाण करते हुए कीर्ति में मिलने वृत्तमा जाता है लैकिन पुरुष मिलने से मना कर देता है।

⇒ भट्ट काम्पट्ट जीवन के ऊद्धर्व का परिचायक जीत है।

(13) पश्चिमी जीत :-

⇒ पनवट से पानी अक्षर लाने वाली महिला पश्चिमी कहलाती है।

⇒ भट्ट अखल पतिव्रता महिला का लोकप्रीति है।

(14) दीला - मारु -

दीला क्षेत्र का लोक जीत

⇒ प्रेम कहनी पर आधारित

⇒ डक्की जाती के गाम्कों द्वारा किया जाता है।

Note:- दीला — नरवर (m.p.) — अमृ उवर्ध

मारु — प्रुणल (जैसलमीर) — अमृ 1/2 उवर्ध

अन्य सभी - मालवणी

मारु से प्रेम करने वाला - उमर सुमरा

(15) जीरकन्धा :-

श्रीबाबाठी क्षेत्र का लोक जीत

⇒ महिलाओं द्वारा जीरकन्धा अवधारण (ऊंट का) सूखे से सम्प्रभावी जाने वाला जीत।

Note:- जीरकन्धा - ऊंट के गाली का अवधारण

- Note:- ✓ क्षालियी - केट के गले का आकृत्ति
 इन्होंने - गोदिर गी छाँगी जाने वाला था। वार्षिक
 द्वारा - महिलाओं की जांच का आवश्यक
 नामों " "

बोलर/हीलरियी - लाचों के खंड पर यमा जाने वाला गीत

✓ क्ष्यलियी - भात के समय यमा जाने वाला गीत

✓ क्षूमारी - शुर्जर जाति की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला कुमार का नाम

क्षूमार - महिलाओं के कान का आकृत्ति

(16) धर्मसिद्धि :-

⇒ अत्री ग्रेवाइ में अल जनजाति ने स्त्री-पुरुषों द्वारा एक साथ मिलकर गीत जाने वाला गीत।

(17) लाकड़ी :-

↳ बालिक अर्थ - छुलने से

⇒ प्रेमी द्वारा प्रेमिका को छुलने पर लाकड़ी जानी जाती है।

लाकड़ीमाँ

शुंगारिक लाकड़ी

प्रेमी-प्रेमिका

गाविल लाकड़ी

⇒ गवहर की लाकड़ी

⇒ नीरवज की लाकड़ी

⇒ सिंसमन की लाकड़ी

Note: (i) राजा में फसल की कठाई की लाकड़ी कहते हैं।

(ii) लाकड़ी महाराष्ट्र का लोकगृहा भी है।

(18) उर्पी :-

उर्पी का प्रमुख लोक गीत।

⇒ इस गीत में पालि अपने पति की उर्पी की फसल लोने से मना करती है।

(19) गंगासिंधी :-

↳ शृंगारिक गीत

⇒ महिला द्वारा कथे की सम्बोधित करते हुए यमा जाने वाला गीत।

(20) हिंडी / हिंडील्या :-

सावन के महीने में महिला हरा द्वाले समय यमा जाने वाला गीत।

(21) हवड़ीयी :-

पानी अरकर लाते समय महिला द्वारा अपनी हवड़ी की प्रकृता में यमा जाने वाला गीत।

(22) सूफांा :-

↳ बिरद गीत

⇒ बिरदी द्वारा द्वारा जीत के माध्यम से सपनी की अच्छा का वर्णन किया जाता है।

(23) मरसिंधी :-

मारवाड़ क्षेत्र में किसी प्रभाषकाली धार्ति की सूत्यु पर मरसिंधी लिखे रखे पढ़े जाते हैं।

Note:- सिवाना के कल्यासमहीन ने अपनी सूत्यु से पहली ही लीकुनिर के पूर्वीराज राठोड़ से मरसिंधी लिखवा लिया।

(१४) पवड़ी :-

- वीर रस का गीत
- ⇒ बाटों सभं नारों क्रमा हरावल में खड़े होकर जागा जाने वाला वीर रस का गीत।

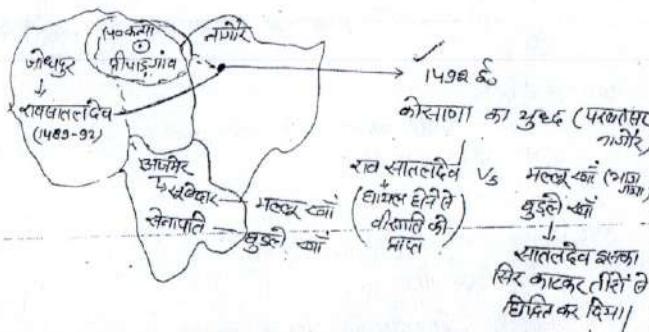
Note:- हरावल - सेना की आप्ति प्रेक्षणी

पंकजल - सेना की अंतिम/पीढ़ी की प्रकृति

(१५) कलाली :-

- वीर रस का गीत जो महाफिल में जागा जाता था।
- ⇒ राजा-महाराजाओं के सुरापन के समय कलाली गीत जागा जाता था।

(१६) छुड़ला गीत :-



- ⇒ छुड़ला महीसुख पर छुड़ला वृत्त करते सभं जाया जाने वाला गीत।

⇒ जीधपुर (मारवाड़) की कीरी का लोक गीत

- ⇒ राव सातलदेव की स्मृति में जाया जाता है।

✓ छुड़ला महीसुख - जीधपुर

→ भींग कुण्ड अप्पमी

भींग छुड़ला वृत्तिया

आकर्षित गीत

(१७) हरजस :-

- देवताओं के सम्मुख आकर्षित गीत

⇒ घर में किसी वृद्ध की सूखे पर हरजस जाने जाते हैं।

(१८) चिरजा :-

- लोकदीक्षियों के गीत/आरती/अजन

⇒ सालसे लड़ा चिरजा - जींग माता (रेवासा, सीबुर)

(१९) छरा गाया जाता है।

- Note:- कनफर्ट साधुओं का कुम्भ - भर्तुहरि (अलवर)
आदिवासीयों - " " - बठीहर (झंगपुर)
" का दुसरा कुम्भ - बीटिशा आमा (जैसवाड़ा)
" का अर्धकुम्भ/ सहरियों का कुम्भ - सीताकांडी (छाता)
मारवाड़ का कुम्भ - राणीचा (जैसलमेर)

(२०) तेजागीत :-

- ⇒ किसान फसल बीते से पहले अच्छी फसल की कमता के लिए तेजा गीत जाता है।

Note:- तेजागी के कुछ कार्यों का उपालक देवता कहा जाता है।

(२१) प्रावली :-

- रामदेवपी के अजन

(२२) पवड़ी :-

- पाल्लूजी के थोरी/नायक जाति के ग्रन्थों द्वारा मां वाधांग पर पाल्लूजी की लोकगाया का गुणगान किया जाता है, जिसे पाल्लूजी के पवड़े कहते हैं।

(32) लोक्युरिया!-

गीत:- करौली जिहे रे छावनी के गवतों द्वारा जाये जाने वाले

(33) छकड़ी!:-

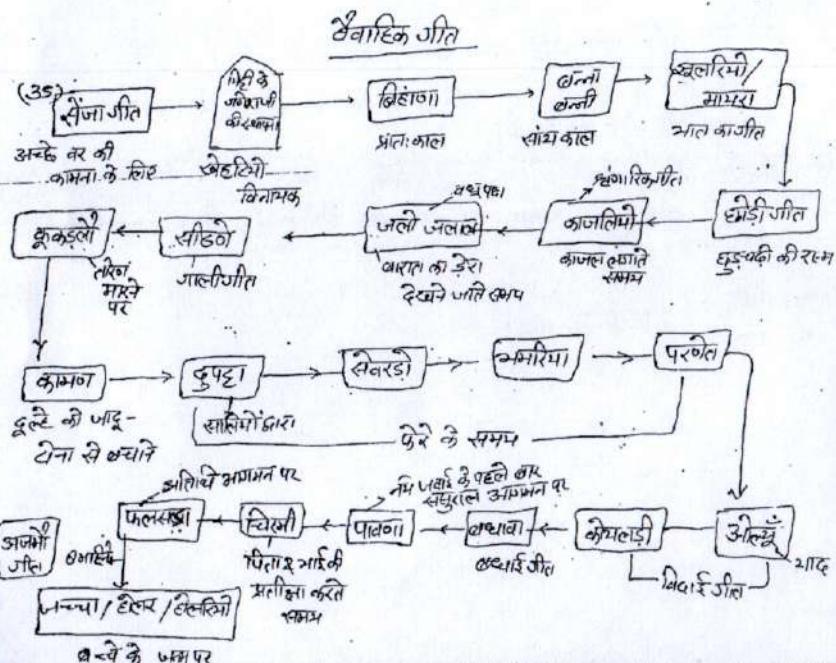
विवाद, जन्म, आ असारहथा पर देवताओं के प्रसन्न करने के लिए-
रातीजां बिपा जाता है,

⇒ रातीजां का अंतिम गीत छकड़ी कहलाता है।

Note:- देवताओं के प्रसन्न करने का जाये जाने वाले गीत - प्रभातियाँ कहलाते हैं।

(34) जकड़ी/ खकड़ी!:-

मुस्लिम समझाय में फीरों के प्रसन्न करने के लिए जाये जाने वाले
गीत।



(1) सेंजा गीत:-

बधु द्वारा अचैतन्य की कामना के लिए जाया जाने वाला गीत।

Note:- विवाद के अवसर पर स्थापित भिट्ठी के गोदान की सूति -

जीहटियी विनायक

(2) बिहाँडा:-

विवाद के अवसर पर प्रातः काल जाये जाने मांगलिक गीत।

(3) भला-छलनी:-

दुल्हा-दुल्हन की मंगलकामना के लिए सांचा के समय जाये
जाने वाले गीत।

(4) खुलारिमी/माझरा:-

भात के अवसर पर जाया जाने वाला गीत।

(5) छुट्टी गीत:-

दुल्हे की धुड़चकी की समय पर जाया जाने वाला गीत।

(6) काजलियी:-

→ द्वारा देव की ओरों में काजल डालते समय
⇒ विवाद के अवसर पर भागी द्वारा देव की ओरों में काजल डालते समय
जीत जाया जाता है।

(7) जलाजलाल:-

बधु-पहा की महिलाओं द्वारा वर की वरात का द्वारा देवता
जीत समय जलाजलाल जीत जाया जाता है।

(8) सीढ़ी:-

राजन का स्कमात्र जाली गीत।

⇒ वर स्वं बधु पहा की महिलाओं द्वारा जीजन के समय हूसी-हिली
के उद्देश्य से भट्ट जाली-जीत जाया जाता है।

(9) कामना!:-

दुल्हे की जाह्नवी-दीने से बचाने के लिए जाया जाने वाला गीत।

Note:- कामना का शाहिक अर्थ - जाह्नवी-दीना।

(10) कुकड़ी :-

दूल्हे करा तीरों गरे जाने पर जामा जाने वाला गीत।

(11) कुपड़ी :-

दूल्हे की सालिंग करा भैरे के समझ जामा जाने वाला गीत।

(12) सेवडी(13) पर्वीत

} भैरे के समझ जाने जाने वाले गीत।

(14) अमरिया(15) आलूँ :-

बैरी की बिवाह के समय बैरी को भाव करते हुए गाये जाने वाला गीत।

Note:- आलूँ का वार्षिक अर्थ - "आद"

(16) कीमली :- विवाह से सम्बन्धित विवरण गीत।(17) छावा :-

किसी मांगलिक या शुभ कार्य के दूरी भैरे पर गाये जाने वाले गीत।

(18) पाठा :-

नवीदे (नवी) जवाहि के ससुराल अपान घर भीजन के समय गाया जाने वाला गीत।

(19) चिरसी :-

माझे (पीहर) से सम्बन्धित गीत।

⇒ नव विवाहित दुल्हन ससुराल में अपने भाई खंड पिता की प्रतीक्षा करते समय की मनोदृष्टि का वर्णन चिरसी पीढ़ी के सम्बन्धित करते हुए चिरसी गीत

के माध्यम से करती है।

Note:- चिरसी एक खेल भी है।

(20) फलसड़ा :-

आतिथि अपान पर जामा जाने वाला गीत।

(21) जन्या / देलर / देलरिया :-

बच्चे के घन पर जाये जाने वाला गीत।

अन्य गीत :-

(22) लसर

(23) पटिया] आदिवासी पर्वतिया छोटों में जाने जाने वाले गीत।

(24) बिछिया(25) पंचिड़ा :-

लड़ती रुंदे छुल्हाइ कीन में मैले रुंदे उत्सव के आभीजन पर पंचिड़ा गीत गाया जाता है। जिसमें राजस्थान का लोगवाद अलगीजा वजता है।

(26) छूमर :-

छूमर नृत्य करते समय गाया जाने वाला गीत।

⇒ इस गीत में एक लड़की अपनी माँ से क्षे भूंगार की सांगति लेव आशूफा की माँग करती है।

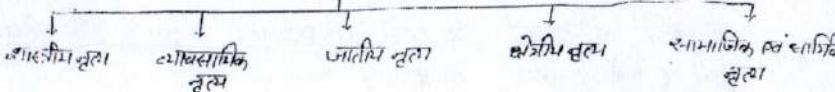
(27) रसिया :-

बीली के अवसर पर बूज खंड मैवार हीन में (वरतपुर) गाया जाने वाला गीत।

(28) फण

(29) धामस] बीली के गीत।

राजनीति नृत्य

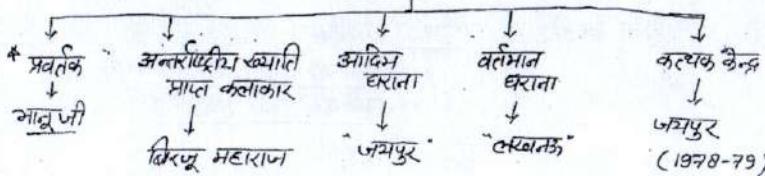


8

① वास्त्रीय नृत्य :-

→ व्याकरण या विषयों पर उत्थारित नृत्य

→ राजनीति का समाज वास्त्रीय नृत्य — कल्याण



② व्याक्षांशिक नृत्य :-

वे नृत्य जो आजीविका चलाने या धन कमाने के उद्देश्य से किये जाते हैं।

→ तेहताली नृत्य

→ कच्छी छोड़ी नृत्य

→ अंबाई नृत्य

→ कालघेलिया जाति के नृत्य ४२ बांड पा शा

४ - गिरुड़ी

शा - वागडिया

इ - इण्डीनी

फा - पठिहारी

शा - शोकरिया

⇒ कंजर जाति के नृत्य LDC

L - लाठी

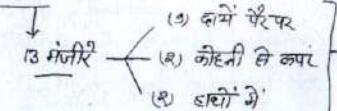
D - धाकड़

C - पकड़ी

→ कठपुतली नृत्य

→ गोपीं के नृत्य

(A) तेहताली :-



कानड़ जाति (रामदेव पर्वि के नवजात)

महिला प्रधान

छेकर (राजनीति क्षमात्र)

→ उद्योग स्थल - पालता गाँव (पाली)

→ प्रमुख क्षेत्र - पाली, जैसलमेर, नागोर

→ प्रमुख व्यापार - गंजरी (धन)

तम्भूरा / तन्दूरा / तानपुरा / खेतारा / निसान / बेंगी (तत्त्व)

→ प्रमुख कलाकार - मांडी लाड (प्रतापगढ़)

(B) कच्छी छोड़ी नृत्य :-

→ शेखावाटी क्षेत्र का व्याक्षांशिक नृत्य

→ सरगड़ा व वाकरी जाति के पुरुषों द्वारा

पुरुष प्रधान

→ वालधेप - बांड (धन)

नीरित (अवनद्वाद)

→ प्रमुख कलाकार :- गोकर्ण परीक्ष (निवाड़, लोंग)

दंकर लाला भहलीत (जोधपुर)

दी पांकरी

⇒ पुरुषों की कमर पर लकड़ी की छोड़ी लांधना

दी म - फूल के स्कर्पों से दी छोड़ दीने का अभास

दी म - पैरने वालों की कला के लिए प्रसिद्ध

दी म

दी म

(c) भौवाई नृत्य :-

- ⇒ रुक प्रकार की नृत्य लाइना
 - ⇒ पुरातात के सलिलेट जिनों में किमा जाने वाला नृत्य /
* मुख्यतः उदयपुर ज़िला का नृत्य
 - ⇒ भौवाई जाति के स्त्री-पुरुषों का नृत्य (मिलियत नृत्य)
 - * अनमोदता - याही जी खाट (नागार्पी) → केकड़ी (अजमीर)
 - ⇒ पुरुष एवं मादिला कलाकारों का स्त्री जी स्त्री जी कहते हैं,
- प्रमुख आकृता :-
- (i) धारी के किनारों पर नृत्य
 - (ii) मिलास पर नृत्य
 - (iii) कोच के दुकड़ों पर नृत्य
 - (iv) तलाबार पर नृत्य
 - (v) मुँह से रुमाल छँडाना
 - (vi) स्थिर पर कलश (धड़ी) रखकर नृत्य।

प्रमुख कलाकार :-

कीणा (भौवाई)

* अस्मिता काला (भौवाई) - अन्तर्राष्ट्रीय

जीविता वर्मी (भौवाई)

राजमी (भौवाई)

श्रीष्ठा लोनी (भौवाई)

↳ "लिलि कंडर"

पुण्या भास (प्रथम भौवाई झंडनतंक)

⇒ इस नृत्य में रंगीत, पर कम ध्यान देकर साहसिक गतिविधियों (कर्तव) पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

9

(d) कालबैलिया नृत्य :- (B2 वा इ पा शा)

- ⇒ राजस्थान का रुकमात्र नृत्य जिसे UNESCO 2010 में विश्व विरोह स्वर्ची (हैरिटेज लिस्ट) में घोषित किया गया है।
- ⇒ इसे सिक्काने के सिए हरी जोंक (आमीर) में एक स्कूल बोला जाया।
- ⇒ प्रमुख कालबैलिया नृत्य -

(i) काणडिया नृत्य - मादिला प्रधान नृत्य

⇒ धर-धर जाकर अस्त्र माँगते समय मादिलाओं द्वारा किमा जाने वाला नृत्य।

प्रमुख वादांग्र - मीर्संग (सुपिर)

→ राज० का संबंधी कीय वादांग्र

→ राज० का "Jesus Harp"

छुरालिया (सुपिर)

(ii) इण्डीनी :-

⇒ कालबैलिया जाति के स्त्री-पुरुषों द्वारा बृत्तकार रूप में किमा जाने वाला नृत्य।

प्रमुख वादांग्र - (i) पुणी/वीन (सुपिर),

(ii) खेजरी (अवन्नद + घंट)

(iii) पाणिहारी -

↳ झुगल नृत्य.

⇒ इस नृत्य में पाणिहारिन मटका हाथों में लेकर नृत्य करते हैं;

(iv) छांकिया -

कालबैलिया जाति का प्रेम कदानी पर अस्त्रारित झुगल नृत्य।

⇒ प्रमुख वादांग्र - पुणी/वीन एवं खेजरी

⇒ प्रमुख कलाकार - गुलामी
 कलात्मका -
 कमली -
 राजनी -

Note:- गुलामी की १९८६ में पहली पुस्तक से सम्मानित किया गया।

Note:- वर्षावालीत इस मकबूल कालाभिमा नृत्य की विवाह है।

(E) कंजरजाति के नृत्य :- (LDC)

i) लाठी नृत्य - पुरुष मध्यान नृत्य

ii) धाकड़ - पुरुष मध्यान नृत्य

⇒ शुद्ध कलाओं का प्रदर्शन

⇒ हालापाव इवं वर्षा के शुद्ध पर आधारित

iii) चक्री नृत्य - (फूंदी नृत्य)

⇒ कंजर जाति की अविवाहित युवतियों करा किया जाने वाला नृत्य।

⇒ इस नृत्य में युवती करा अपने प्रियम से श्वेतांग की सम्मानी जाने का अनुरूप छिया जाता है।

⇒ दूर्घी जिले में गान्धपद कृष्ण वर्तीया (डडी तीज / छाँड़ी तीज / कपड़ी तीज / सातुड़ी तीज) के दिन चक्री नृत्य किया जाता है।

⇒ इस नृत्य में छवड़ा तदलील की नृत्यक्रियां प्रसिद्ध हैं।

⇒ प्रमुख वादमंत्र - छप, नगाड़ा, मंजरिया (छप)
 (अवनध्द)

प्रमुख कलाकार -
 गांति
 कुलवा
 फिलमा

(F) कठपुतली नृत्य :-

⇒ नट जाति का नृत्य।

Note:- १९५२ में देवीलाल सासर द्वारा उदमपुर में "भरतीय लीला मञ्च" की स्थापना की गई जो कठपुतली नृत्य की संरक्षण महान नाते वाली संस्था है।

(G) जामीय नृत्य :-

गोली जाति	जरासिया जिली	कंजर जीवा जूनी	जार्जर जाति
गोली जाति	गोरा मां मीज (मी)	L - लाठी	ए - C - चरी
गोली पाली (मी)	शूल झट (टी) वाल	ग - धाकड़	J - छुमरियी
गोली गोली (मी)	गो - गोर	३ - चक्री	मेवा
गोली गोली (मी)	रा - रायण	रा - रायण	स्तवर्ष
गोली गोली (मी)	मां - मोकला	मां - मोकला	रागाजा
गोली गोली (मी)	मो - मोरिया	मो - मोरिया	
गोली गोली (मी)	जा - जावारा	जा - जावारा	
गोली गोली (मी)	शूल - शूल	शूल - शूल	
गोली गोली (मी)	ल्ले - ल्लेर	ल्ले - ल्लेर	
गोली गोली (मी)	वाल - वालर	वाल - वालर	
गोली गोली (मी)	गर्वी	गर्वी	
गोली गोली (मी)	सहरिया जाति	कालाभिमा जाति	माली
गोली गोली (मी)	हा - हाथीमाना	B 2 गाड़पाली	चरवा
गोली गोली (मी)	र - रमणी	र - रिचुर्ड	
गोली गोली (मी)	दि - दिल्ली	दि - दिल्ली	
गोली गोली (मी)	इश्वरी (टी) बील	इश्वरी (टी) बील	
गोली गोली (मी)	इ - इन्द्र	इ - इन्द्र	
गोली गोली (मी)	बा - बन्दपुरी	बा - बन्दपुरी	
गोली गोली (मी)	द्वि - द्विकरी	द्वि - द्विकरी	
गोली गोली (मी)	स्त्री - बोला	स्त्री - बोला	
गोली गोली (मी)	ल - लोणी	ल - लोणी	
गोली गोली (मी)	श्री - श्रीकरिया	श्री - श्रीकरिया	

गील जाति के नृत्य :-

महिला	पुरुष	गीत
* द्वारा	* गेर	गीर्जित
* गंवारी	सार्व	गीर्जित
* हाथीमना	पालिकीच	गीर्जित
* अद्वा	लेजा	गीर्जित
	रमाडी	गीर्जित
	किराडी	गीर्जित
	इन्द्री	गीर्जित

(ii) गेर नृत्य / घेर नृत्य :-

- मेवड़ एवं बांडमेर में प्रचलित
- गील जाति के पुरुषों (गेरिये) द्वारा किया जाता है।
- प्रमुख केन्द्र - कनाना गाँव (बांडमेर)
- हीली के दूसरे दिन (द्विलाडी) से 15 दिन तक
(पंच क्रृष्ण द्वंद्व - चैत्र अमावस्या)
- प्रमुख वस्त्र - "ओडी" (फौंक के समान)
- पुरुषों के लक्ष में डोडा / छड़ - "खोडा"

प्रमुख वाद्ययेत्र - टील (अवन्धन)
गाँकिया (खुधिर)
थाली (धन)

प्रमुख कलाकार - भूर्यन्द जैन

Note:- तलवरों / चारूर की गेर -

- ⇒ मेनार गाँव (उदमपुर)
- ⇒ चैन शृणा नितिया (परमार्थीज)

*(ii) जंकरी नृत्य / राई नृत्य :-

→ मेवड़ क्षेत्र में गील पुरुषों द्वारा

→ एक स्त्री की नृत्य नाटिका

→ लीकनाट्यों का नैतानिय

→ राजा का प्राप्तिनियतम् लीकनाट्य

⇒ राजावधन के दूसरे दिन से 40 दिन तक
(भाद्रपद शुक्ल एकांश - आष्टिन शृणा द्वारा)

⇒ शिव - अस्मालुर की नृत्य पर आधारित व्याख्यक नृत्य

⇒ प्रमुख वाद्ययेत्र - माहल (अवन्धन)

⇒ शिव को "पुरिया" कहा जाता है

(iii) हाथीमना नृत्य :-

⇒ गील जाति के पुरुषों द्वारा विवाह के अवसर पर द्वुतीय के बल केन्द्र
किया जाने वाला नृत्य।

(iv) अद्वा नृत्य :-

⇒ गील जाति के पुरुषों द्वारा अद्वा कलाओं का प्रदर्शन।

Note:- 2/4 नृत्य सरकार द्वारा प्रतिबोधित है।

(v) द्वारा :-

⇒ गील जनजाति की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला द्वारा का स्तर नृप

* ⇒ द्वारपुर जिले में काठिक मूर्खिया के दिन नीता-पाली का मेला लगता है जिसका विशेष आकर्षण द्वारा नृत्य है।

(vi) नीजा वृत्त्यः -

- ⇒ गोल दर्शन जाति के स्वी - पुरुषों द्वारा किया जाने वाला वृत्त्य
- ⇒ यह छेली के अवसर पर किया जाता है,
- ⇒ वधु चुकाह के लिए भी यह वृत्त्य किया जाता था।

जरासिमा जनजाति के वृत्त्यः

महिला	पुरुष	मिक्षित
मांदल	रामण	गों
झूर	मीरिया	भावका शुरु वालर

(v) गों वृत्त्यः - सिरीही - जरासिमा - मिक्षित

- ⇒ गोंगोर (थेंन शु वृत्त्या) के अवसर पर।

Note:- जरासिमों का सबसे छड़ा मेला - गोंगे मेला (मनस्वारी मेला)

⇒ थेंन शु वृत्त्या

⇒ सियावा गों, सिरीही

- ⇒ इस वृत्त्य में गोंजा बाध्यकारी जापा जाता है।

(तट)

(vi) रामण वृत्त्यः - सिरीही - जरासिमा - पुरुष

- ⇒ जरासिमों का ल्वोंग वृत्त्य जिसमें पुरुष माहिलाओं के बस्त्र धारण करते हैं।

(vii) मांदल वृत्त्यः - सिरीही - जरासिमा - माहिला

- ⇒ मांदल बाध्यकारी (अवनाथ्द) पर किया जाने वाला वृत्त्य

12

(viii) मीरिया :- सिरीही - जरासिमा - पुरुष

- ⇒ गोंगोर स्वापना से विवाह के दिन तक किया जाने वाला वृत्त्य।

(ix) जवारा :- सिरीही - जरासिमा - मिक्षित

- ⇒ हीली के अवसर पर लाडों में जवार लेकर किया जाने वाला वृत्त्य।

(x) लुद्वृत्त्यः - सिरीही - जरासिमा - मिक्षित

- ⇒ तालियों की धाप पर किया जाने वाला वृत्त्य

(xi) झूर वृत्त्यः - सिरीही - जरासिमा - माहिला

- ⇒ जरासिमा जनजाति की झूर जीव्र की माहिलाओं द्वारा किया जाने वाला झूर का एक रूप।

- ⇒ बसमें की पक्की छीते हैं - वर पक्का वधु पक्का

(xii) वालर वृत्त्यः - सिरीही - जरासिमा - मिक्षित

- ⇒ लैंबाइक या मोगाइक अवसर पर

- * ⇒ बिना विली बाध्यकारी के किया जाने वाला वृत्त्य

- * ⇒ 30 April 1991 को वालर वृत्त्य पर इसका टाक टिक्के पारी किया।

- ⇒ उद्धमपुर के जंगलों का वालर वृत्त्य प्रसिद्ध है।

- ⇒ इस वृत्त्य का प्रारम्भ हुदूर पुरुष छारा हाथ में छाता या तलवार लेकर किया जाता है।

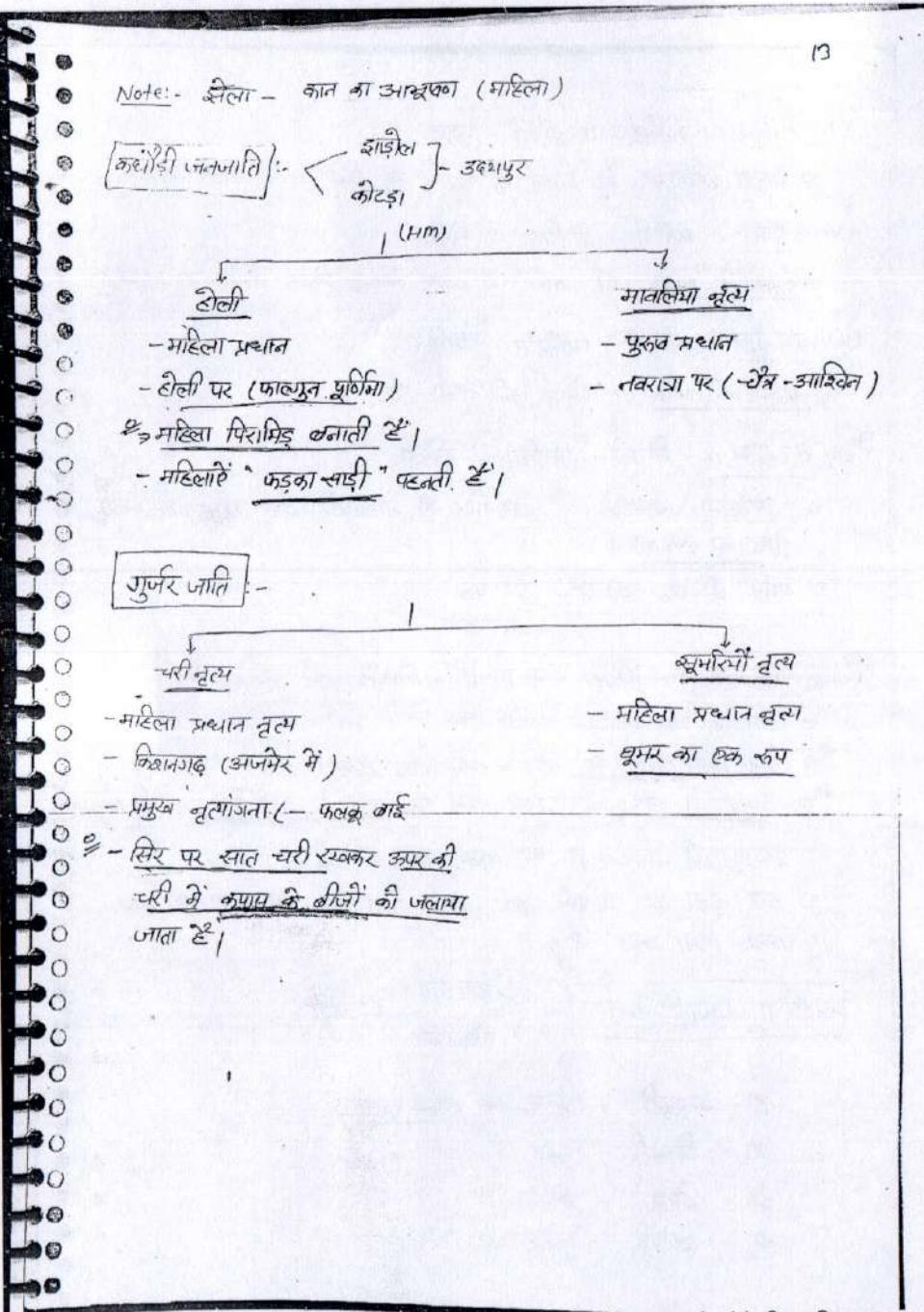
सहरिया जनजाति के वृत्त्यः :- [शाहकार
विश्वामित्र] मांदल

इ - बन्दपुरी - पुरुष - ल्वोंग वृत्त्य

ही - द्विकारी - पुरुष

झी - झीला - मिक्षित

ल - लंगी - माहिला



बोजरां जाति :-

महाली वृत्त्य -
लाइसर छोड़ में बोजरा जाति की चुकतियों द्वारा बुर्जी के दिन घन्घरा के अपना पति मानकर उससे मिलन की आस में गृह दृश्य किया जाता है।
⇒ इस वृत्त्य का प्रारम्भ बुर्जी के लाध लैकिन अल दुक्कद दीता है।

माली जाति :-

परवा वृत्त्य -
⇒ परवा छु कुती का बरतन है।
⇒ बच्चे के जन्म पर माली जाति की माहिलों द्वारा सिर पर बांसी का बरतन रखकर किया जाने वाला वृत्त्य।

मैव जाति -

(i) राणागांजा वृत्त्य -
मैव जाति के ही पुरुषों द्वारा युद्ध कलाओं का प्रदर्शन करते हुए किया जाने वाला वृत्त्य।

(ii) रत्वई वृत्त्य -
मैव जाति की माहिलों का वृत्त्य खो दुल्हन की विदेशी पर किया जाता है।
⇒ यह वृत्त्य सते लाल वाह जी की सूति में भी किया जाता है।

(4) श्रीवाच्ची वृत्ति :-

(5) श्रीवाच्ची क्षेत्र के वृत्ति :-

(6) श्रीवाच्ची क्षेत्री वृत्ति -

श्रीवाच्ची क्षेत्र का उक्ताव व्यावसायिक वृत्ति।

(7) गोदावरी वृत्ति -

श्रीवाच्ची क्षेत्र का पुरुष सम्बन्ध वृत्ति

⇒ प्रमुख वादांगो - नगाड़ा (अवनद्व)

⇒ हिली के डंडारीपाठ द्वे हिली तक
(मछ प्रहिमा) (फाल्जुन प्रहिमा)

Note:- इस वृत्ति में कुछ पुरुष, महिलाओं का स्वयं करते हैं जिसे गोदावरी कहा जाता है।

(8) वंडा वृत्ति -

श्रीवाच्ची क्षेत्र का पुरुष प्रधान वृत्ति

⇒ हिली के अवसर पर

⇒ वादांग - वंडा (अवनद्व)

(9) डफ वृत्ति -

श्रीवाच्ची क्षेत्र का पुरुष प्रधान वृत्ति

⇒ यसें पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी) के अवसर पर

⇒ प्रमुख वादांग - डफ (अवनद्व)

(10) झुर/झुरुर वृत्ति -

श्रीवाच्ची क्षेत्र (मुख्यतः - झुरुर) का अवलील(झुर)

वृत्ति

(11) जिंदाद वृत्ति -

(12) कद्मूती वृत्ति -

(II) जालीर क्षेत्र के वृत्ति -

(i) ढील वृत्ति -

जालीर क्षेत्र का ढील वृत्ति

⇒ विवाह के अवसर पर किसा जाने वाला पुरुष प्रधान वृत्ति।

⇒ वादांग - ढील (अवनद्व)

⇒ "दहना छींटी" में किसा जाने वाला वृत्ति

⇒ प्रमुख जातियों -

D B M S
ढील जील माली सरगड़ी

⇒ इस वृत्ति की प्रक्रिया में लाने का श्रीम अतिथि मुख्यमन्त्री - "जयनामानामानामाना"

की है।

(ii) झुम्कर वृत्ति -

जालीर क्षेत्र का झुम्कर

⇒ रेखारी/राईका जाति का महिला-मध्यान वृत्ति

⇒ हिली के अवसर पर

Note:- राईका जाति सर्वां - जालीर जिले में निवास करती है।

(III) अस्तपुर क्षेत्र के वृत्ति :-

(i) लम वृत्ति :-

अस्तपुर एवं अलवर क्षेत्र

⇒ पुरुष प्रधान वृत्ति

⇒ हिली/फपल की कटाई/ नई फसल के आने पर

⇒ वादांग - वंडा / झगड़ा (अवनद्व)

⇒ इस वृत्ति में महिलाओं द्वारा जापै जाने वाले गौठ रसिया कहलाते हैं।

⇒ इस वृत्ति की लम - रसिया भी कहा जाता है।

(ii) अरुणा नृत्य -

मुख्यातः उत्तरप्रदेश का लोकनृत्य।

⇒ राजसंग्रह, उत्तरपुर जिले में किया जाता है।

(iii) दुर्गा नृत्य -

उत्तरपुर क्षेत्र का लोकनृत्य।

अन्य क्षेत्रीय नृत्य -

(1) अविनि नृत्य -

भस्तराची समझाय के सिव्ह घाट अनुगामियों द्वारा किया जाते वाला नृत्य।

⇒ प्रमुख केन्द्र - कलारियासर (बीकानेर)

⇒ प्रमुख प्रथान नृत्य

⇒ वाधयंत्र - नगाड़ा (अवतार)

⇒ बीकानेर के महाराजा जंगामिं द्वारा बस जूतों की सरेक्षण प्रवान किया गया।

⇒ इस नृत्य में नृत्यके "फते-फते" शब्द का उच्चारण किया जाता है।

Note:- अमिल जनजाति द्वारा खतरे की स्थिति में एक-दूसरे की सहायता के लिए "फाईर-फाईर" शब्द का उच्चारण किया जाता है।

(iv) कुट सहितस्व (कैमल फैसिल)

⇒ लड़िया (बीकानेर)

(v) डंग नृत्य:-

नाथद्वारा (राजसमंद) में हीली के अवसर पर छोटी-पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य।

(vi) विन्दीरी नृत्य:-

झालावाड़ क्षेत्र में हीली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला "विन्दीरी" का नृत्य।

(vii) नाई नृत्य :-

मांडलगाँव (अलवाड़ा) का लोकनृत्य।

⇒ इस नृत्य में पुरुष वरीर घर और लैफ्टर तथा द्वीर का मुख्योद्योगाकर खेंग करते हैं।

⇒ चैत्र कृष्णिमासीनी की भव सूत्र किया जाता है।

⇒ मुगल वर्षाचार व्याहरणों के मांडलगाँव अवामन पर सर्वप्रथम भव नृत्य किया जाता था।

(viii) मध्यर नृत्य (भैरव नृत्य):-

भैरव (अजमेर)

⇒ चैत्र शुक्ल द्वंश के दिन भावर में "वर्षाचार की लवारी" जिकाली जाती है जिसके आगे विश्वल द्वारा नृत्य किया जाता है।

Note:- इस नृत्य में विश्वल भावर के "वास परिवार" का भास्तुति जनता है।

(ix) फैजा नृत्य :-

वागड़ क्षेत्र में (झालपुर-छालवाड़ा) दीपावली के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य।

(x) दरणी (लीबड़ी) नृत्य :-

उदयपुर जिले में बच्चों द्वारा दीपावली के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य।

(xi) कानूड़ा नृत्य - दीहलन (वाडमेर)

सुईमा मैला (अलौकुम - पर्वत में लकड़ी)

⇒ विरातरा माता का मंदिर

⇒ गोद के लिए

(xii) कीलियी - वारियी नृत्य

रेगिस्टानी क्षेत्र में नर पंचाई के सहस्राल अग्रसर पर किया जाने वाला नृत्य।

(5) सामाजिक एवं धार्मिक तृतीय :-

(i) शूमर तृतीय :-

- ⇒ राजा का राजपत्र तृतीय
- ⇒ राजा का राजवाड़ी तृतीय
- ⇒ राजा में नृत्यों की आली
- ⇒ राजा का प्रतिलिपिता तृतीय
- ⇒ राजा में दृश्यों का दृश्य
- ⇒ राजा में दृश्यों में सिर्फ़
- ⇒ मरवाड़ एवं जेवाड़ क्षेत्र के राजप्रत बरानी में।
- ⇒ अमीर सिंह के काल में प्रसन्न।

* उत्तराति - मध्य राष्ट्रिया के भूगु (भग्न) तृतीय से।

- ⇒ विशुद्ध रूप से महिलाओं का तृतीय।
- ⇒ गांगोर, दीली, छीटी लीज एवं वैकाहिक उवसरों पर।

वाधकों - दील, नगाड़ा, बाघनारी

प्रमुख विशेषताएँ - (i) हाथों का अचक्कावर सेवालन।

(ii) हाँड़ी में दूस छनना।

(iii) Clockwise एवं anti-clockwise

* (iv) शूमर में 8 steps (मात्राएँ) दीली हैं जिन्हें संबद्ध कहते हैं।

Note:-

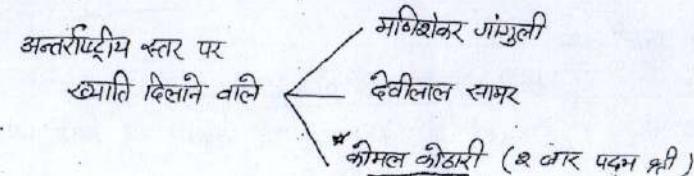
शूमर के रूप

- शूमरा - भील
- शूर - जरासिंहा
- बूझारीमी - झुजरी

16

(ii) शुड़ला तृतीय :-

- ⇒ जीधपुर (मारवाड़) का लोकतृतीय
- ⇒ राव चालादेव की स्त्रीमि में
- * ⇒ चेत्र छुं आष्टमी से चेत्र द्वा तक (शुड़ला भवीत्सव)
- ⇒ राजी में महिलाओं विद्वित मत्के में वीपक खलाकर उसे सिर पर रखकर तृतीय करती है।



1960 - नृपायन संस्थान की स्थापना

- ⇒ स्थान - गोरुंदा (जीधपुर)
- ⇒ संस्थापक - कीमल कीठरी
- ⇒ विजयदान देवा
- ⇒ शुड़ला तृतीय को संरक्षण प्रदान करती है।

(iii) धाली तृतीय :-

धाली पावाजी के अक्षरों द्वारा धाली तृतीय किया जाता है।

(iv) लाणुसिंहा / शुट्कल तृतीय :-

जरीली जिले में केलादेवी के अक्षरों द्वारा किया जाने वाला तृतीय।

(v) शूमर - शूमरा तृतीय :-

राजा का शौक तृतीय

- ⇒ इंगरपुर जिले में विधवा महिला को गोल धेरे में बिछाकर जांबकी अन्य महिलाओं द्वारा उसके पारों और तृतीय किया जाता है।

⇒ इस दृष्टि के पहुंचाते परते वो वास्तवान ले जिसा पाता है।

17

(vi) दृष्टियों - खेड़ीजों दृष्टियः

पुरुषों के बजे पहलकर किमा खाने वाला दृष्टि।

(vii) लोक - चाहनी दृष्टि :-

गवीशा चतुर्भुजी के अवधार पर क्षेत्र वर्चों द्वारा
विचित्र वेषभूषा पहलकर किमा खाने वाला दृष्टि दृष्टि।

(viii) जरला दृष्टि :-

मृत्यु: गुजरात का लोक दृष्टि

⇒ राज. के झाँगरपुर जिले में नवरात्रा के अवधार पर किमा खाला है।

Note:- डांडिया - मरवाड़ का लोक दृष्टि है।

"राजस्थान लोकनाट्य"

"जें ज्ञानधारण के मनोरंजन के लिए ज्ञानसाधारण द्वारा अनिवार्य करना,
लोकनाट्य की श्रृंखली में आता है।"

* लोकनाट्य की विशेषताएः :-

(i) छनका देवाज स्वरूप होता है। ✓

(ii) छनमें लोक वास्तविकों का प्रयोग किया जाता है।

(iii) छनकी विषय क्षेत्र ऐतिहासिक, पर्यावरण आ स्थानिक होती है,

(iv) छनमें स्थानिक भाषा का प्रयोग किया जाता है।

(v) छनका आमीरन गाँव में जुले स्थान पर होता है।

(vi) छनका आमीरन बिशुलक किया जाता है।

विशेष घटक के लोकनाट्य -

① स्याल-

④ सुविंद लीला

② नीटकी-

⑤ डाळ स्वरारी

③ तमाशा -

⑥ गांवरी

④ स्वाज-

⑤ समत-

⑥ जॉरी-

⑦ अवार्दि-

⑧ चारझी-

⑨ रमलीला-

⑩ रसलीला-

⑪ सतकादिक लीला-

⑫ फड़-

⑬ कठुतली नाट्य -

① रघ्याल :-

किसी पौराणिक, रेतिहासिक, व्यापिक या सामाजिक आख्यान कथानक
में एवं पद्धति के रूप में अलग-अलग पात्रों द्वारा गालूर प्रस्तुत
करना रघ्याल कहलाता है।

रघ्याल का सूत्रधार - छलकारा
रघ्याल का कलाकार - खिलड़ी
रघ्याल की प्रतिभोगिता - द्वेष
रघ्याल जापियाँ का प्रवर्तक - मनरेख

विभिन्न प्रकार के रघ्याल :-

- (i) कुचामनी रघ्याल
- (ii) जम्पुरी रघ्याल
- (iii) द्विवावटी रघ्याल
- (iv) तुर्च-जल्दी रघ्याल
- (v) अलीबक्करी रघ्याल
- (vi) कलंद्या रघ्याल
- (vii) हैला रघ्याल
- (viii) छपाली रघ्याल
- (ix) बीट के द्वेष
- (x) शिशंगाली रघ्याल
- (xi) मंद छै का रघ्याल

(i) कुचामनी रघ्याल ⇒

→ कुचामन एवं मेडता (नारी) में प्रचलित।
→ प्रवर्तक - अष्ट अस्त्राराम
→ प्रमुख कलाकार - उग्रमराज (अन्तरिष्ट्रिय कलाकार)
 → रघ्याल में सेवाद बोली प्रारम्भ की।
→ प्रमुख वादायत्र - दोल (अवनष्ट)
 शाहनार्द (भुपिर)
 सारजू (तत)

* प्रमुख कथानक :-

दौँद नीलगिरी
राव रिंगल
जीरा चुदाण
मीरा मंगल

प्रमुख विवेषिताएँ :-

- (i) इसका स्वरूप ओपेरा के समान होता है।
- (ii) महिला पात्रों की शृंगार कुरुक्षेत्र के छरा विभावी विभावी जाती है।

(ii) जम्पुरी रघ्याल :-

→ जम्पुर में प्रचलित
→ महिला पात्रों की शृंगार महिलाएँ विभावी हैं।
→ शुणिजन रघ्याना (शब्दवंशवादी) के कलाकार भाग लेते हैं।
 → प्रमुख - दाँद दब्बा
 → सेपित पुक
 सर्वदा प्रतापासीं के काल में।

प्रमुख कथानक :- (प्रीकु पुर मिर्गा) ⇒ trick

जी ⇒ जीरी - जीरेन
कु ⇒ कानशूजरी
प ⇒ पठान
र ⇒ रसीली तम्बोलन
मिर्गा ⇒ मिर्गा - बीछी

(iii) ब्रेकावाटी ख्याल :- (चिन्हिता ख्याल)

⇒ निडाना (बुद्धिमुद्रा) & खड़ीला (सीकर) में प्रयोगित
 शब्द - प्रतिक - नामूरम् क्रिया
 शब्द - प्रमुख कलाकार - दुलिमा राजा
 शब्द - अन्य कलाकार - सीहनविं वनी

प्रमुखविनाशक:- हरि - हरि आज बड़ी \Rightarrow trick
 कथानक

हरि - हीर-रौसा

हरि - हरिष्चन्द्र-राजा

आ - आलादेव

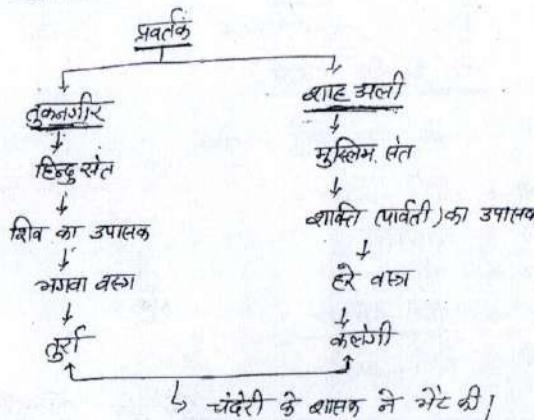
ज - जमद्वे-कलाली

भ - भर्तुर्हरि

दी - दोला - मरवण

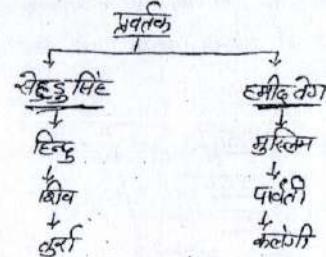
* (iv) तुर्फा - कलंगी ख्याल :-

⇒ गंदरी (M.P.) से सम्बन्धित



राजा में भैरव में प्रचलित

⇒ शिवुडा - चिन्हिता
 निम्बहिंडा



अन्य कलाकार !:-
 - अमदभाल लीनी
 - वेतरम सीनी
 - दरावन्द
 - डाकुर ओंकार सिंह

प्रमुख विशेषज्ञताएँ:-

(i) राजा गंदरी आकर्षणिक ख्याल है

(ii) राजमात्र ऐसा ख्याल जिसमें मेच की सजाया जाता है। तथा मेच का विशेषज्ञता कहलाता है।

(iii) इस ख्याल में को पक्षी के चित्र प्रतिस्पर्धी के रूप में संवाद देता है जिसे 'जमत' कहते हैं।

(नील)

(iv) इस ख्याल में छोटों के भग लीनी की आधिक सम्बन्धित होती है।

(v) इस ख्याल की विली की 'माच' नहीं है।

प्रमुख विशेषज्ञताएँ :-

- राजा मीरवज

- राजा हरिष्चन्द्र

- भक्त - हुव

- नसीहत

- रहनागीर

- कर्तवा दारिद्र्ण
- बन्दू संग्रही
- नृत्याभिनंगणाल

(v) अलीकर्क्षा क्षयाल :-

- ⇒ मुद्रावर तहसील (अलवर) में प्रचलित
- * ⇒ प्रवर्तक - अलीकर्क्षा
 - ↳ अलवर का सम्बोधन
- * ⇒ अदीरवाटी / दीरवाटी / राठी लोली में प्रस्तुत किया जाता है।

(vi) हेला क्षयाल :-

- ⇒ लालसीट (हेला) & स.गाड़ीपुर में प्रचलित
- ⇒ प्रमुख वादाधेंत्र - नीलत (अवतार)
- ⇒ प्रवर्तक - शामर हेला
- ⇒ हेला - लम्बी आवाज / देर लगाना।

(vii) कर्हिया क्षयाल :-

- ⇒ भरतपुर, धोलपुर, भरीली & स.गाड़ीपुर में प्रचलित
- ⇒ कुण लिलाओं का मेवत
- ⇒ स्वर्गाश - मिहिमा
- ⇒ कहानी कहने वाला - कठेन

(viii) छपाली क्षयाल :-

- ↳ अलवर & भरतपुर में प्रचलित
- (शोषणाग्र)

(ix) भेट के दंगल :-

- ↳ भोड़ी - भोड़ी (धोलपुर) में प्रचलित
- ⇒ वार्षिक कहानियों का मेवत।

20

(x) माच का क्षयाल :-

- मासेहार [] - अलवाइ
- दमारियाह []
- अनक - वार्षिक व्यवसरा

(xi) किशानगढ़ी क्षयाल :-

- किशानगढ़ (अजमेर)
- लीकप्रिय जनाने वाले - क्षेत्रिकर शर्मा

(xii) नीटकी :-

- उत्पानी शाहरस (UP)
- कानपुर (UP)
- शाहरसी लोली से प्रचलित
- उ वादाधेंत्रों का प्रयोग
- प्रमुख वादाधेंत्र - नंगाड़ा (अवतार)
- प्रचलित दो - A उ उ उ उ उ उ उ उ उ
- अलवर भरतपुर भरीली धोलपुर
- * ⇒ प्रवर्तक - भरीलाल
- ⇒ प्रमुख कलाकार - गिरज मसाद कामों

- अन्य कलाकार -
- कल्मण सिंह
 - बहू देवी
 - बालूलल लकीम
 - आक्षा
 - कुण्डा
 - बुलाल लक्ष्मी

प्रमुख नोटकियाँ - [आ अब हस ले जा] ⇒ Trick

21

आ ⇒ आद्वा - अद्वा

अब ⇒ अमर सिंह राहें

ह ⇒ हरिष्चन्द्र - नरामति

स ⇒ सत्यवान - साधिती

ष ⇒ लैला - मजदूर

ना ⇒ नल - वसन्ती

Note:- वीलपुर में नत्याराम की मंडली हरा नोटकी की जाती है।

③ फड़ :-

* कपड़ के पर्द पर लोकलोका के परिवर्तन का चित्रण - फड़ विशेषकर

प्रसिद्ध
शाहपुरा (जीलाकाड़ा)

"जीकी परिवर्त"

* प्रमुख कलाकार - श्रीलाल जीकी (पद्म स्थी उत्तरकार)

भरत की प्रथम मालिला फड़ चित्री - पार्वती जीकी

विद्युत प्रसिद्ध कलाकार - गीतली देवी

अन्य कलाकार - कुण्डली जीकी

शान्तिलाल जीकी

विजय जीकी

चित्रकार - चित्रा (पुरुष)

चित्री (मालिला)

फड़ का "वाचन" होता है।

मनीषी पूर्ण होने पर

वाचन करने वाला - भीषा

फड़ के जीर्ण-शीर्ण होने पर वही पानी में वहा दिया जाता

है - फड़ ठड़ी करना।

४) प्रमुख फड़ :-

(i) पालजी की फड़ - अजिल/अमर जाति के गीष्ठी हरा - राजस्थान (र)

→ अजिल लाल जीकी हरा विविध

4) राज. में सबसे लोकप्रिय फड़

(ii) रामलिङ्गी की फड़ - कामुक जाति के गीष्ठी हरा - राजस्थान (र)

→ सर्वप्रथम विविध - दीप्तिमाला विविध

(iii) देवलालभाजी की फड़ - लगाइवाल गुजरात जाति - गुजरात (र)

→ सबसे प्राचीन फड़

→ सर्वोच्च गीष्ठी वाली फड़

→ सबसे लोकी फड़

→ सबसे दीपी फड़

→ इस टिक जारी हीने वाली एकमात्र फड़ (2 sep. 1992 - 54)

⇒ वर्तमान में जीवनी मुद्रणमें इसी फड़ है।

(iv) जैसासुर की फड़ -

→ बालत जहाँ दीता है।

→ घटरी / बावरिमा जाति के लोग घटरी करने से घटे कसकी पूजा करते हैं।

(v) छपालला - हामिला की फड़ -

→ हड्डीती में सर्वलित

→ चित्रा - घूर्ल पी आर्द्ध

→ वाचन दिन में बिला वाद्यनंग के द्विमा जाता है।

(vi) अनिताभ छव्यन की फड़ -

→ छक्का वाचन रामलल भीपा & पतासी गीष्ठी हरा।

→ चित्रा - विजय जीकी

(vii) छुणा जीला की फड़ -

→ सबसे नवीनतम फड़

→ राज. की एकमात्र व्हेट-ब्लाइ (Black & white). फड़।

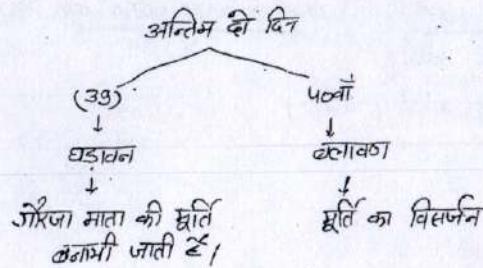
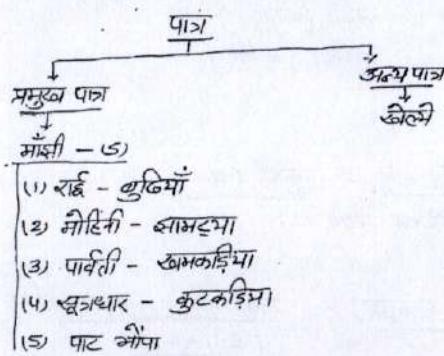
→ चित्रा - बलभाष्माला जीकी

→ वर्तमान में प.ग. हाइस में स्थित है।

→ २-रुक्मिणी (दिल्ली)

④ गँवरी लोकनाट्य :- (रादिनाट्य)

- ⇒ राज० का मात्राचीनतम् लोकनाट्य
- ⇒ लोकनाट्य में वह संस्कृत शब्दों का मिलता है।
- ⇒ मैत्रादि कौन्ते में अनेक पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- ⇒ स्थानकाल के दूसरे दिन से ५० दिन तक
 - ⇒ पात्रों द्वारा ही-लब्धी श. मात्रा-मार्दि के सेवन नहीं किया जाता।
 - ⇒ स्त्री संगीता नहीं करती है।
- ⇒ प्रमुख वाक्यांश - मांडल (अवनाट्य)
- ⇒ शिव - अस्मान्तुर की कथा पर उपाधारित धार्मिक लोकनाट्य।
- ⇒ शिव की "पुरिया" कहा जाता है।



22

⇒ गँवरी लोकनाट्य में विभिन्न कथाओं की रुक्ष सार जोड़कर साक्षात्कृत है। इस प्रकृति किमा जाता है, जिसे "गँवरी की शब्द" भी कहते हैं।

⇒ गँवरी लोकनाट्य पर उचारित पश्च गविनी नामक नाट्य की रूपना आनु भासी हरा की जड़।

⑤ रम्मत :-

उद्देश्य - जैसलमेर से

⇒ तेजकावि के काल की जैसलमेर की रम्मतों का स्वरूपित करते हैं।

⇒ तेजकावि द्वारा लिखी गई रम्मतें - (i) स्वतंत्र व्यावरी

⇒ 1943 में महात्मा गांधी के बेटे की

(ii) मृगल

(iii) जीर्णी - अरुहरि -

* (iv) द्वितीय तम्छीलन

Note:- तेजकावि जैसलमेर के क्रांतिकारी थे। तथा अंग्रेज सरकार ने द्वितीय विश्वास विप्रतारी वारंट जारी किया।

⇒ तेजकावि ने कमिशनर के घर के बाहर जाकर कहा कि -

"कमिशनर खील दरवाजा हमें भी जैल जाना है,
हिन्दू तेरा न तेरी वाप का है,
मातृश्रम की वनाया दूने छंडीबाजा है।"

⇒ राज० में रम्मते स्वर्वा लोकप्रिय - वीकावीर की।

⇒ रम्मतों का आग्रीजन मुक्ततः दीली पर या सावन के माहीने में किया जाता है।

⇒ रम्मत प्रारम्भ करने से पूर्व रामदेवजी का अजन गाया जाता है।

⇒ जामी खाने वाली अन्तंगति - (i) गायपाती वक्ता -

(ii) लावणी -

(iii) चीमासा -

Note:- रम्यत का वाक्यिक अर्थ - सुखी/खेला

⇒ लीकानेर में रम्यों का आयोजन पाठों पर किया जाता है।

Note:- अतः "पाठ संस्कृति" लीकानेर की समूल विशेषता है।

⇒ लीकानेर में रम्यों का आयोजन फाल्गुन ईश्वर आष्टमी से फाल्गुन ईश्वर पर्वती तक किया जाता है।

⇒ रम्यत हमेशा सुखाने दीती है।

⇒ प्रमुख वाध्यता - नगदा एवं दीलक

लीकानेर की प्रसिद्ध रम्यते :-

(i) फकड़ दाता री रम्यत :-
लीकानेर में रम्यत का मारम्भ कसी रम्यत से होता है।
(फाल्गुन ईश्वर आष्टमी) ⇒ आठों के चौक पर आयोजन

(ii) अमरसिंह छोड़ री रम्यत :-

→ विर रस मध्यान
आचार्यों के चौक में

(iii) जट युवड़ की डेढ़, मेरी री रम्यत :-
→ स्वनाकर - खेल लाल सुखित
→ डेढ़ - कुम्भमास का राजा।
→ पली मेरी
→ आदर्श पति - पालि के जीवन पर आधारित
→ आयोजन - मैरीनाथ, चौक में।
(फाल्गुन 11 से फाल्गुन 14)

(iv) मतिराम री रम्यत :-

⇒ हिंडर्सन चौक के लिए प्रसिद्ध

⇒ आयोजन - व्यासों के चौक पर

⇒ दर्शनों पति-पत्नी द्वारा ननद-ओंजाई जी मंदिर - लाली है।

(v) कन्हैयालल सुखित री रम्यत :-

(vi) जमनालाल कला री रम्यत

(vii) सात्य महाराज री रम्यत

(viii) फाल्गु महाराज री रम्यत

(6) रसलीला :-

→ प्रत्यक्ष / प्रसंभ करने वाला - बलभादार्प

⇒ कृष्ण की लीलाओं का मंदिर

⇒ अस्तपुर व औलधुर (कुम्भमीन) में स्थानित

⇒ अस्तपुर में लीलाप्रिय बनाने वाले - शिवलल उमावत

उत्तम कलाकार - हरणीविन

रामस्वरूप जी

प्रसिद्ध रसलीलाएँ - कमाँ (अस्तपुर)

कुलीरा (जमपुर)

(7) रामलीला :-

→ प्रारम्भ करने वाले - तुलसीदास

⇒ राम की कहानियों का मंदिर

प्रमुख रामलीलाएँ -

(i) विसाइ (कुम्भमीन) - सुरक अविक्षय पर आधारित
(कुम्भी रामलीला)

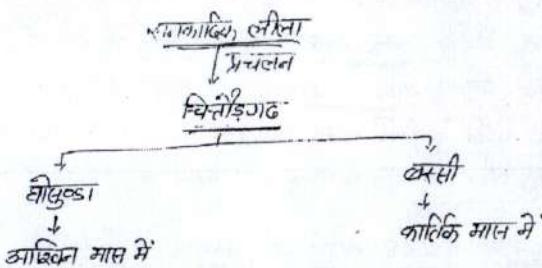
(ii) अट्ट (वाराँ) - छिव का धनुष जंता जरा तेढ़ा जाता है।

(vii) पाद्मदा (कीटा)

(viii) वेंकटेश मंदिर (अस्तपुर)

(8) सनकादिक लीला :-

⇒ विष्णु के दोष आठ अवतारों की कहानियों का मंचन।



प्रमुख सनकादिक लीलाएँ - (i) हिंदूवर्कमप- नृसिंह

- (ii) गोरा- काला भैरव
- (iii) गोदा
- (iv) कालिका

(9) तमाशा :-

→ मूलतः महाराष्ट्र की लोकी

⇒ राज. में प्रथम - जम्पुर

*⇒ जम्पुर में प्रमध्य करने का श्रेष्ठ - सराहि प्रतापसिंह

महाराष्ट्र से करीभर अट्ट की लोकी

✓ तमाशा का प्रतीक - करीभर अट्ट

⇒ इस समय जीवर खेल तमाशा करती थी।

कुमी
कुमी छेष (मोड गाडिका)

⇒ असाह परम्परा की प्रारम्भ करने वाले - फूल भी अट्ट

अन्य कलाकार - बालुदेव अट्ट

जीपीवन्द अट्ट
जीपीकृष्ण अट्ट

उत्तर विष्णुज तमाशा-

- (i) जीपी जीगांड का तमाशा - फालुन घरिमा (हीली)
- (ii) हीर राहा - चंद्र कृष्ण दक्ष (चुलडी)
- (iii) बुड्ढन मिंगे - चंद्र कृष्ण उत्तरी (विस्त्रिक्ती)
(बाल्लालाहमी)
- (iv) जीपीचंद्र - चंद्र उमाधस्मा

(10) भवाई लोकनाट्य :-

⇒ गुजरात के सान्निकट ज़िलों में।

⇒ मुख्यतः उदयपुर संभाग का लोकनाट्य

⇒ भवाई भाति के सत्री-पुरुषों द्वारा।

*⇒ खलसाता - बाली जी भाट (केकड़ी - अजमेर)

⇒ सत्रीस्वयं पुरुष कलाकारों को सहायी द्वारा सगा भी कहते हैं।

⇒ संगीत पर कम ध्यान देकर सहस्र गतिविधियों पर ध्यान।

- तलवरों पर नृत्य
- थाली के लिनरों पर नृत्य
- गिलास पर नृत्य
- अंगारों पर नृत्य
- मुँह से रसाल उठाना
- सिर पर कलश स्वरकर नृत्य

प्रमुख कलाकार :- पुष्पा ध्यास (प्रथम भवाई नर्तक)

- ✓ * लोपार्ह द्वेषावता (जम्पुर)
- वीणा (भीलवाड़ा) (63)
- * आमिता काला (जम्पुर) (111)
- जोधिता शर्मा (जम्पुर) (118)
- राज्मि (जम्पुर) (195)
- कुण्ठा सीनी (उदयपुर)

↳ "लिटिल बैंडर"

*⇒ विष्व प्रसिद्ध कलाकार - सांगीलाल सांगाडिमा (वाडोर)

*⇒ वर्तमान प्रमुख कलाकार - स्वरूप वेंवार (वाडोर)

Note:- चेंचोर्ड लैकनाटमा पर आधारित "जर्मनी ऑफिल" नामक नाटक की स्वता बोलता जौँधी हरा जी गई। जिसे अस्त के बाहर लेकन में खेला गया।

(ii) स्वांड़ :

⇒ किसी देशीय सा प्रौद्योगिक पात्र की देवदूषण वारा करके नामल करना।

⇒ स्वांड़ करने वाला हिन्दू - "आंड"

⇒ मुस्लिम - "आनभती"

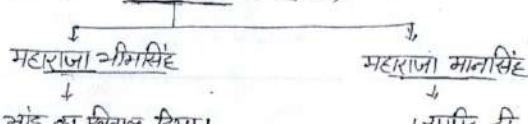
⇒ कलाकार - बहसपिया

मगुरुन कलाकार! - (i) भानकीलाल आंड (भीलवाड़ा)

↳ भींडकी भैंट

Note:- भींडकी भैंटी - गलता भी (भृपुर)

(ii) धनकुप आंड (जीधपुर)



भागरी की

(iii) फखुराम आंड - केलवा (राजसमंड़)

Note:- जाल स्वांड़ -

→ माण्डल जाँब - भीलवाड़ा में प्रचलित

⇒ चैत्र कृ० त्रिवेदी पर किया जाता है।

⇒ फुकों द्वारा बारीर पर रुद्ध लपेटकर स्वं द्वीर का मुकोटा लगाकर स्वांड़ किया जाता है।

⇒ अंड सर्वप्रथम मुगल बहूल्याह शाहजहाँ के माण्डल जाँब आगमन पर किया जया।

(xii) कठपुतली नाट्य -

⇒ कठपुतली का क्षाविक अर्थ - लकड़ी से बिरिटि पुतली से है।

⇒ बसका निर्माण अलू / अरडू वृक्ष की लकड़ी से होता है।

⇒ छलका निर्माण गुच्छतः उद्धपुर में किया जाता है।

⇒ नट जाति के लोगों द्वारा कठपुतली का खेल दिखाया जाता है।

⇒ कठपुतली नाट्य का सूत्रधार जी धांडी से कठपुतलियों की नियाता है - स्थापक

⇒ 1952 में देवीलाल खान ने उद्धपुर में "भरतीय लोक कला मण्डल" की स्थापना की, जिसने कठपुतली नाट्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकार्थी बनाया।

प्रमुख कठपुतली नाट्य :-

(i) सिंहासन भत्ती

(ii) पृथ्वीराज सेनापती

(iii). अमरसिंह राठोड़

Note:- (i) कठपुतली के भीरबीरी होने पर वही पानी में जला दिया जाता है।

(ii) वर्षा बाल के समय, देवताओं के सीने पर (आण्डा शु. लकड़ी से काठिक हुए स्कार्फी) कठपुतली नाट्य नहीं दिखाया जाता है।

(iii) कठपुतलियों से मीरेजन के लिए भगवान् (भृपुर) में कठपुतली स्थापित किया जाया।

(iv) "पदम भी" की कठपुतलियों का दावा करते हैं।

(xiii) डाक्सवारी :-

उद्धपुर जिले में चैत्र कृष्ण त्रितीया के अवसर पर तेली समाज द्वारा निकाली जाने वाली स्वारी।

(14) दृसिंह लीला :-

→ नेशाक शुक्रल व्यतुर्लक्ष्मी (दृसिंह व्यतुर्लक्ष्मी) के अवतार पर जीवायुक्त में
मूलके का मेला लगता है, जिसमें दृसिंह लीला का प्रस्तुतीकरण
किया जाता है।

(15) गोद्धर्व नाट्य :-

मारवाड़ क्षेत्र में जैन धर्म की विचारण वस्तु पर आधारित
लीकनाट्य।

(16) पारक्षेत :-

→ मूलतः - अफगानिस्तान का लीकनाट्य

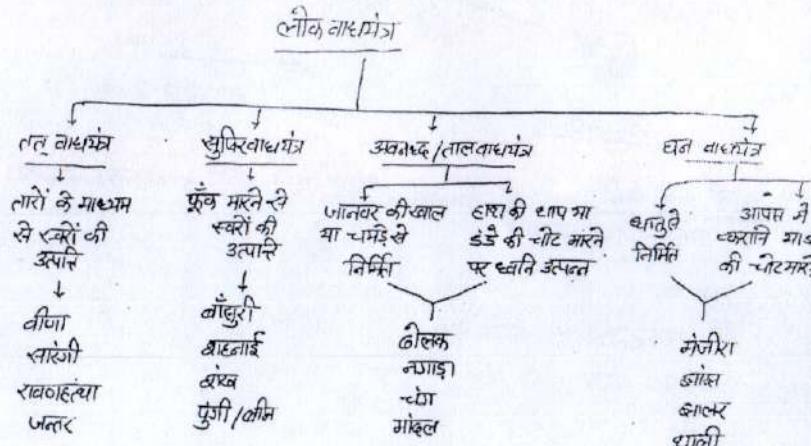
→ राज. में टेक जिले में प्रचलित

→ कहीं पठान क्षेत्री में प्रस्तुत किया जाता है, वस्तुका प्रारम्भ टेक नवाब
फैजुल्ला खाँ के समय हुआ।

प्रमुख कवकार - अब्दुल खाँ

* करीम खाँ लिहंगा

Note:- पहले इसे "पश्चीमी भाषा" में प्रस्तुत किया जाता था।



तत् वाच्यांक :-

रावण हुजरी फूँक खन्तर खाँ के रुप का रुर हो।

रावण - रावणहत्या

हुजरी - हुजरी

चि - चिकारा

द्व - दुकानों, दुकानी

ज - खन्तर

भ - अपेंगा, उनपेंगा

त - तन्दुरा / तम्भुरा / तानपुरा / चोतारा / वेणी / गोद्धात

ख - खम्मच

सा - सारंगी

इ - इकतरा

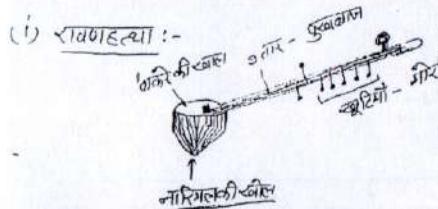
के - केनरा / केन्दुरा

रछ - रखाँ, रछाँ

का - कामापचा

धुर - धुरमठल, धुरिन्द्र

दो - दोतरा

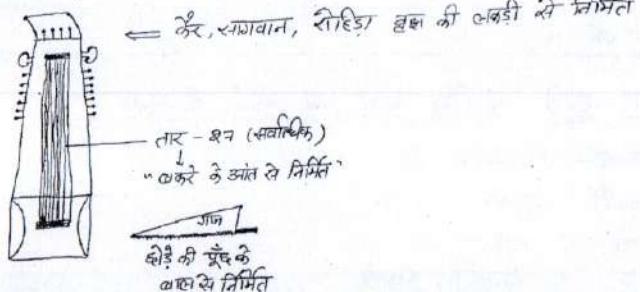


⇒ पांचूजी एवं रमदेव जी की फड़ का वायन करते समय राबाहत्या वाद्यमें का प्रयोग किया जाता है।

(iv) गुजरी:-

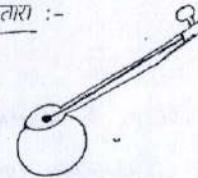
राबाहत्या का लीटा एवं
⇒ 5-तार वाला वाद्य एवं

(v) साठी:-



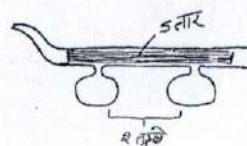
⇒ सबसे प्रमुख स्वर चुरीला तत् वाद्यमें
⇒ लोग जाति का वाद्यमें
जैसलमेर छाड़मेर
⇒ प्रमुख कलाकार - मनकाश त्रिमावत
मुनीर जाँ

(vi) छकतार, छीतार :-



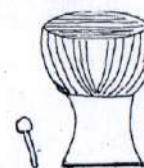
- एक तार / दो तार
 - घुल वाख / आपि वाख
 - छंगुली इसा वास्तव
 - मीरा लाल का वाद्यमें
 - नारद मुली का वाद्यमें
 - कालबीलिमा जाँति
- वाद्य सम्बन्ध के साथूओं] वाद्यमें
वाय सम्बन्ध के साथूओं] वाद्यमें

(v) खतर :-



- ⇒ बीजों का आरामिक रूप
- ⇒ देवनारायण जी की फड़ का वाहावत उपरि
जाति के गोपीं इसा वायन करते समय
जापा जाता है।
- ⇒ प्रमुख कलाकार - उपरामेर, टीक, भीलवाड़ा, मेवाड़

(vi) अंपांग :-

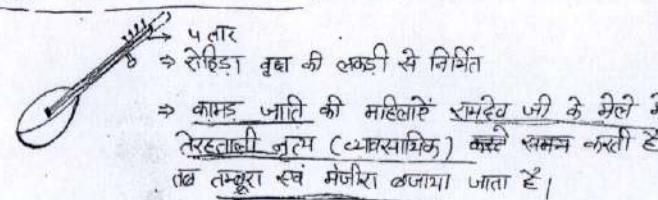


- ⇒ इमानुमा तत् वाद्यमें
- ⇒ मेवात जीव का वाद्यमें
- ⇒ अल्पर के जीवियों इसा वास्तव
- प्रमुख कलाकार - * पुहुर खाँ गवाति - अंपांग का जादूजार
- ⇒ न्यू केल्ली
- ⇒ झौंख्य
- ⇒ गंगा - प्रमुख
- उमर खाँ मेवाती

(vii) अंपा :-

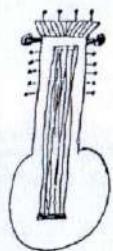
मील एवं गराकिया जनजाति का वाद्यमें

(viii) तम्भुरा / तम्भुरा / तम्भुरा / नीतारा / नीतो / निशान :-



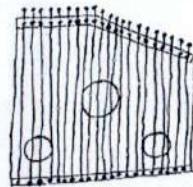
- ⇒ रेहिड़ा वृक्ष की लड्डी से बिरित
- ⇒ कामड जाति की महिलों रमदेव जी के मेले में
त्रिहताली जूत्य (धारसायिक) करते समय करती है।
तब तम्भुरा एवं मेजिरा जापा जाता है।

(X) कोमाण्डा :-



- ⇒ सारंगी के नमान
- ⇒ सारंगी की रक्की
- ⇒ 16-27 तार
- ⇒ ब्रिंश, आप, रेहड़ी की लकड़ी से बिर्पति
- ⇒ मुसलमान वीव (मांगांगियार) द्वारा बाजन।
- ⇒ नाथ समराम के साथुओं द्वारा अदृष्टि स्वं
जीपीचट्ट के अजन गाते समर बाजन
- मुख्य कलाकार -
- हरा खाँ
- धोर खाँ
- सफर खाँ (2012 में पदमशीर)

(XI) दुर्मङ्गल / स्वरमङ्गल :-



- ⇒ पश्चिमी राज. में मांगांगियार जाति का वाद्ययंत्र
- ⇒ 26 तार
- ⇒ घटुष्कीयीय वाद्ययंत्र
- ⇒ उफान - कोकिला वीणा।

(XII) चिकारा :-

तीन तार वाला वाद्ययंत्र

- ⇒ केर की लकड़ी से बिर्पति
- ⇒ अलवर रखे अरतपुर में जीगियों द्वारा बजाया जाता है।
- ⇒ इसे भी चिकारा भी कहते हैं।

(XIII) दुकाणी :-

भील जनजाति द्वारा बीपाली के अवसर पर बजाया जाने वाला वाद्ययंत्र।

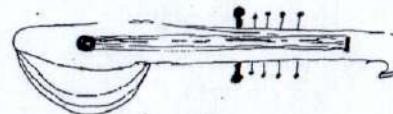
(XIV) रवाळ :-

पांच तार वाला वाद्ययंत्र जिसे अलवर में भी आदों द्वारा तथा देखे में मुसलमानों द्वारा बजाया जाता है।

(XV) रेतोपान :-

12 तार वाला वाद्ययंत्र जिसे रावल स्वं आदों द्वारा बजाया जाता है।

(XVI) वीणा :-



- ⇒ प्राचीनतम् वास्त्रीय वाद्ययंत्र
- ⇒ माँ सरस्वती का वाद्ययंत्र
- ⇒ मुगल शासक औरंगजेब वीणा बजाता था।
- ⇒ मेवाड़ का महाराजा कुम्भा वीणा बादक था।

⇒ प्रसिद्ध कलाकार - विद्व गीति अद्व

- छन्दोनि पश्चिमी रितार में 14 तार जोड़कर मीठन वीणा का बिर्पति किया।
- 1995 में छन्दोनि स्टीन के गियर वालक राई कुड़र से खुगलबंधी करके "प्रीमी अर्गांड" जीता।
- 2008-13 में बन्हे "राजा रत्न पुरस्कार" मिला।
- 2017 में बन्हे "पद्म चूपण" पुरस्कार मिला।

(i) सुपिर वाध्यता :-

पुनरु गुला ते गीता (i) सुपिर से कदा (ii)

अल गुरा (i)	मूरुगा	सी (ii)
गा - गावरी	सी - लोतारी	कु - मुरली
श्व - शूंगल / रणनीति / भैरवी	क - कानी	ह - हहनार्व
गा - गोसुरी	हा - हरगार्व	क्ष - क्षुरगार्व
गा - गांधिमा	अ - अलगीजा	
ने - नंद	व - वर्घा	
मी - मीरचंगा	ठ - ठुडी	
ना - नापाखी	म - मदाक	
सीं - सींगा, सींगी	छु - छुरालिमा	
ता - तारपी	वा - वाहनार्व, विंब	
	कर - करणा	
	कीन - कीन / पेंडी	

(ii) अलगीजा :-



⇒ राजा का राज्य वाध्यता

कुला छिद्र - 8

साथें छिद्र - 6 / 4 ⇒ चौरा

⇒ नक्सांसी वाध्यता

⇒ गोला, मीठा एवं कालबोलिमा जारी द्वारा बाह्यन

प्रमुख छीत्र - अलवर, अजमेर, टोक, अहोवाडा
↓
मेव गुर्जर

⇒ अरबों का जातीय वाध्यता

⇒ जैवलीमेर के लोगों का वाध्यता

प्रमुख कलाकार:- (i) रमनाय चौधरी (पद्मपुरा, जयपुर)
↳ नाळ से अलगीजा बाह्यन

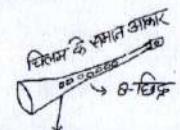
(ii) अलगीजा ज्ञाँ (जैवलीमेर)

Note:- 1982 के राष्ट्रियाई खेलों में बाइमेर के दौर्यों द्वारा ज्ञान ने अलगीजा ग्रामा। इसने इसे राजीवगांधी के विवाद में भी अलगीजा बाजाने का अवसर मिला।

29

⇒ तेजाजी की जीकाया का गुणगात बरते रहना एवं डिहरी पुरी के राजा
के दृष्टि में अलगीजा बाजाना जाता है।

(iii) बाह्यन :-/ नफरी :-



वीश्वम एवं लागतान
की लकड़ी से बिर्क्षा

⇒ नक्सांसी वाध्यता

⇒ बाह्यन वाध्यता

⇒ सुपिर वाध्यतों में ज्यादा अलीला एवं लवनीष वाध्यता

⇒ विवाहिक एवं मांगलिक उवसर पर बांडी के लाय
बाह्यन।

⇒ पहियादी राजा का वाध्यता

प्रमुख कलाकार - (i) गिरिमिलाह रहा

↳ रसेद के संयुक्त अधिकारी में
बाह्यन बाजाड़ /
१९०० - भारत रत्न पुरस्कार

(ii) चौरा गोमाम्बद

(iii) मांगी लाल

(iv) मीरचंगा



⇒ राजा का सबसे छोटा वाध्यता

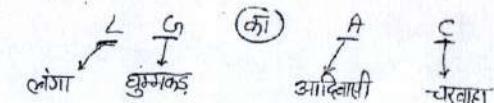
⇒ गूरीप के "Hawas Hawa" के समान

⇒ राजा का हवास Hawa

⇒ लीहे से बिर्क्षा

⇒ लीहे के लीच में रखकर बाह्यन

प्रमुख ज्ञानियों:-



(iv) वांछिमा :-



पीतल से निर्मित

⇒ सरगांडा जाति का ब्यानदानी वाध्यमें

⇒ प० राजस्थान में लाई प्रचलित

⇒ वैताहिक रूप संग्रहालय अवधरों पर व्याजामा जाता है।

(v) तुर्दी :-



पीतल से निर्मित

⇒ राजमहल या तुर्दी में स्वेच्छा छर पर व्याजामा जाता था

⇒ तुर्दी जाति द्वारा व्याजी भोजे के करण क्षेत्रे तुर्दी कहा जाता।

(vi) रामबीरी / बेरी / बूँगल :-



पीतल से निर्मित

⇒ चुम्बक प्राप्ति होती से पूर्व व्याजामा जाता था।

⇒ खाँड़ी जाति द्वारा लोकनाटम प्रस्तुत करते से पूर्व खाँड़ी की छलहठा करते के लिए अह वाध्यमें व्याजामा जाता है।

(vii) गंगुरी / लंबी / लाफी :-



⇒ न छिड़ीं वला वाध्यमें

⇒ अगवान कुण्डा का वाध्यमें

Note:- १ छिड़ि - पावला

२ छिड़ि - कला

गंगुरी वलाकार :- (i) दिमाद चौरसिया

(ii) पन्नलल वीच

(iii) दूर्घ नारायण पुरीहित

(iv) अस्तर गीर्वासी

(v) खम्मा लाल

30

viii) पुणी / लीला :-



उचित

⇒ नक्सांडी वाध्य

⇒ बीमा / लौकी / कुदू की कुम्ही से निर्मित

⇒ कालबीलिया जाति का वाध्यमें

⇒ क्षटीनी व लोलरिमा हृत्य में प्रयोग

⇒ सौंप पकड़ने में प्रयोग

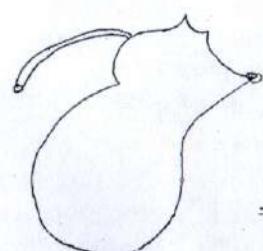
(ix) नामाफणी :-



⇒ सर्पिलाकार चुम्बिवाध्यमें

⇒ साधु-सन्तासियी का वाध्यमें

(x) मषाक :-



⇒ वैलीनुमा छुकिर वाध्यमें

⇒ अंगूजी वाध्यमें "छेंगपाइपर" के समान

⇒ अलवर रखे लवाइमाधीपूर में प्रचलित

⇒ कांका में लगाकर बालन

⇒ अंगूजी के अंगों द्वारा मशक व्याजामा जाता है।

⇒ पुलिस स्टें छुकालालों के लैंड में मशक वाध्यमें प्रयोग जाता है।

⇒ मषाक का जादूगार - "लवन कुमार"

(xi) सतारा :- (शहनाई + गंगुरी + डलगेजा का मिश्रण)

⇒ इसमें दो गंगुरियों होती हैं। तथा प्रत्येक में छ-छ-छिड़ि होती है।

⇒ बसों डगावशभक्ता के अनुसार किली अंगूजी की छिड़ि की बंद किया जा सकता है।

⇒ इसे छोटा डलगेजा, पावा जीड़ी, डोडा जीड़ी कहते हैं।

⇒ डेल्लभीर रखे लाइमेर में मेघवाल रखे मुस्लिम जाति का वाध्यमें सतारा है।

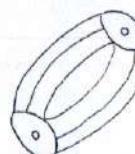
- 31
- ⇒ १९०५ में पक्षा ने राजनीति - सेवकों की लाता वाधाएँ बढ़ायी थी।
- (xii) नड़ :-
- ⇒ गाड़ी की पूँछ की आँखों के लगात वाधाएँ
 - ⇒ काँचे हुक्के की उड़ाए जानी लकड़ी से निपटा
 - ⇒ ५-छिंद्रों तला वाधाएँ
 - ⇒ जैसलमेर द्वंद्वे रेसिस्टानी की में प्रचलित
 - ⇒ समुख कलाकार - जरवा भाइ (लेडी छोड़ों के लिए शहीद)
+ राम द्विंदे-बीहान
- (xiii) दोब़ :-
- चुच्छ झूमि में बजायी भाने वाला वाधाएँ
- ⇒ वर्तमान में मंदिरों में बजाया जाता है।
- | | |
|--------------|--------------------|
| <u>देवता</u> | <u>दोब़ के नाम</u> |
| झूमा | पांचलन / पञ्चलन |
| अर्जुन | देवदत्त |
| रम | पीठ |
| चुच्छियर | अनन्त विजय |
- (xiv) करण :-
- ७-८ कीट लड़ा पीहल का वाधाएँ
- ⇒ चुच्छ झूमि द्वंद्वे राजमहलों में बजाया जाता है।
- ⇒ वर्तमान में पाली जिले के मंदिरों में बजाया जाता है।
- (xv) सुरनाई :-
- क्षाणकी के समान
- ⇒ क्षीराम की लकड़ी से निपटा
- ⇒ सुरनाई का जाहुर - पौधे खों मांगड़ियार
- (xvi) तारपी :-
- क्षयेड़ी जनजाति का वाधाएँ
- Note:- (i) दूद सुरियर वाधाएँ जिसका आकार ओंपीजी के C-अक्षर के समान होता है - पावरी/पावली
- (ii) आदियासिमों का वाधाएँ जिसे घोस का लाजा भी कहते हैं - घुरालिया/घोड़श

(3) अवनष्टि/ताल वाधाएँ :-

इड़ - इड़ (i) छीन मुम्भा (ii) ताला (iii) दीरा
कुम् पुका लेल्ला व्हीना (iv) कुड़ी चुका (v)

इड़ - इड़	क - कार
क - कक	म - मुद्दा
दी - दीलकी	प - पखावज
ग - गङ्गाजाती	ठा - ठेक
दी - दोल	दे - दमाना / अम / टामन
न - नी - नाइ	ख - खंजरी
मा - माद्दल	द्वी - द्वीसा
मा - मंठ	नी - नैकृत
ता - ताला	कुड़ी - कुड़ी
दीरा - दीरा	न - नंगा

(i) मांहल :-



⇒ भगवान् शिव - पार्वती का वाधाएँ

⇒ मिट्टी से निर्मित मुद्दे के समान वाधाएँ

⇒ इसका निर्माण मीलीला (राजस्थान) में किया जाता है।

⇒ इसपर द्वितीय काकेर की खाल लगकी होती है।

⇒ भील जनजाति - जावरी नृत्य > करते समय इस वाधाएँ का प्रयोग करते हैं।

(ii) मृदंग :-

अवनष्टि वाधाएँमें मृदंगी महत्वपूर्ण वाधाएँ

⇒ छस पर बकरी की खाल लगकी होती है।

⇒ आमिक खलों पर बजाया जाने वाला वाधाएँ

⇒ अवार्द्ध जाति, रावल जाति द्वंद्वे राजिया जाति, मीवड़ क्षेत्र में इसका प्रयोग करती है।

(iii) कील :- इसके दो भाग होते हैं -

(A) नम नर (B) महा

⇒ वैगाधिक या मांगलिक अवनष्टि पर कील बजाया जाता है।

⇒ जालोंर क्षेत्र में ठील नृत्य करते समय वाधाएँ बजाया जाता है।

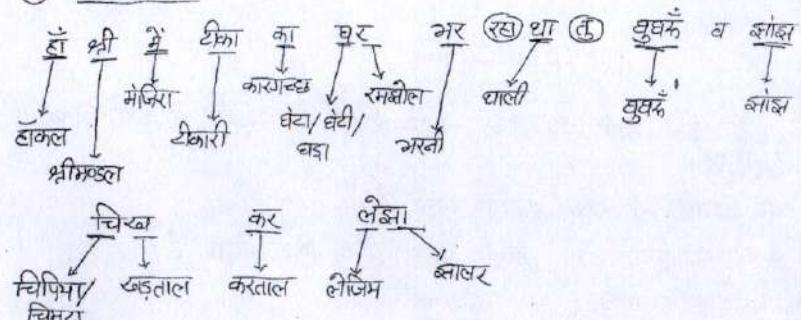
- (v) छोलक :- छोलक का छोटा रूप।
 ⇒ श्रीराम / सप्तराता / अम की लकड़ी की कीचला कल्पे वाधयेत्र वजाया जाता है।
 ⇒ नींगध (N.P.) , उलीपाक (U.P.) की छोलक प्रतिष्ठत है।
- (vi) नींगाइ :- गह गैरी की खाल से निर्मित होता है।
 ⇒ चुच्छ, गोदिर एवं राज द्वरबारों पर वसे वजाया जाता है।
 ⇒ अह नींगत के समान वाधयेत्र
 ⇒ खुपरी के समान भाकृति
 ⇒ लैबाहिक / मांगलिक अवलोरों पर बाहनाई के साथ वजाया जाता है।
- (vii) झरक :-
प्राचीनतम् अवनष्ट वाधयेत्र
 ⇒ भगवत् शिव का वाधयेत्र
- (viii) डंक :- डंक का बड़ा रूप
 ⇒ आम की लकड़ी से निर्मित
 ⇒ छासे ही अण होते हैं।
 ⇒ भील, गोजाजी के ओपी डंक वाधयेत्र वजाते हैं।
 ⇒ गोतापर, हनुमानगढ़, धूर एवं नागर में प्रचलित
- (ix) तारा :-
 ⇒ मुश्लकालीन वाधयेत्र
 ⇒ मुश्लिम धर्म में मीरहम पर ताजिया लिकालते समझ झोक्स एवं ताशा
 वजाया जाता है।
- (x) माठ :- लीकैवता पाकूजी के पवड़, धीरी जाति करा माठ वाधयेत्र
 वजाया जाता है।
- (xi) गम / वमामा / टामक :-
 ⇒ राजा-का सबसे बड़ा वाधयेत्र
 ⇒ लगड़ी का बड़ा रूप
 ⇒ इस पर गैरी की खाल घड़ी होती है।
 ⇒ प्राचीनकाल में हस्ते दुर्ग की दीवार पर खबकर मा चुच्छ झुगि में वजाया जाता था।
 ⇒ भरतपुर एवं स्वर्णमालीपुर में लगते फंचभी आ होली के अवलोर पर वजाया जाता है।

- (xii) बोला :-
 वर्तमान में मेदिनी में वजाया जाने वाला वाधयेत्र
 ⇒ डिग्गी पुरी के राजा के नृत्य में नींवत वजाई जाती है।
 ⇒ प्राचीनकाल में दुर्ग के प्रवेशद्वार पर वजाया जाता था।

- (xiii) खंजरी :-
 ⇒ आम की लकड़ी से निर्मित
 ⇒ इसे अवैर्वद्य / घन दीनों की गियों में लामिल किया जाता है।
 ⇒ कामड़ जाति, कालवैलिमा, भील, नम्पांची खंजरी वजाते हैं।
- 
- खंजरी

- (xiv) चोड़ा :-
 ⇒ लकड़ी के गोदा द्विरे पर चमड़ा चबकर लगाया जाया वाधयेत्र।
 ⇒ श्रेष्ठवटी क्षेत्र में चोड़ा नृत्य करते समझ होती के अवलोर पर चोड़ा वजाया जाता है।
 ⇒ होली पर व्यमल जाते समझ चोड़ा वजाता है।

(5) घन वाधयेत्र :-



- (i) धाली :- कोसे एवं पीतल से निर्मित
 ⇒ घर में पुराने जन्म पर धाली वजाई जाती है। (कोसे की)
Note :- फुरी के जन्म पर छाजला (सूप) वजाया जाता है।
 ⇒ पाकूजी के किमे जाने वाले धाली नृत्य में, धालीवाधयेत्र वजाता है।
 ⇒ गैर एवं धरी नृत्य में धाली वजाई जाती है।

(v) लोपण :-

भृत्य गराहिणी प्रवर्तनाती का लाभांश है, अतः इसे गराहिणी नेत्रिभ्यु रहि कहते हैं।



(vi) गंजाई :-

- ⇒ परिवार एवं कारों से बिलियाँ
- ⇒ इसके की गाँव होते हैं अतः गरु जीड़ से वजामा खाता है।
- ⇒ इसके की आम लीकदेवता रामदेवता के भवत्ता काम्ह जाति की माहेश्वरी द्विष्टाली दृष्टि (मावसाधिक दृष्टि) करते समय गंजाई लगती है।
- ⇒ अह मुख्यतः द्वारपुर जिले का वाध्यतेर है।

(vii) छोड़ना :-

- ⇒ मंजिरि का बड़ा नप
- ⇒ श्रीखबरी छोड़ा में कर्द्धी छोड़ी दृष्टि करते समय अह वाध्यतेर वजामा खाता है।

(viii) अरनी :-

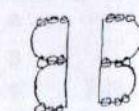
- ⇒ मिट्टी के मटके पर नासे की चाली रखकर वजामा खाते वाला वाध्यतेर
- ⇒ अलवर, अरतपुर में प्रचलित
- ⇒ लीकदेवता तेजाजी के भीषे अरनी वाध्यतेर लगती है।

(ix) बड़ताल :-

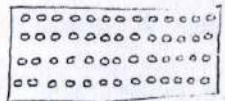
- ⇒ 6 से 8 हेक्टर लकड़ी एवं 2 हेक्टर लोड़ी लकड़ी की पट्टियों से बड़ताल लगाई जाती है।
- ⇒ अह इकतारा के साथ वजामा खाता है।
- ⇒ साथु सन्नासियों छारा मुख्यतः इसका मनोरोग किया जाता है।
- ⇒ बड़ताल का जादूगर - सही एवं

(x) अरताल :-

- ⇒ अंगूजी के 'B' अङ्गर के समान वाला वाध्यतेर
- ⇒ पाली एवं लाडीर जिले में प्रचलित।



(xi) अरिहन :-



⇒ नपड़े पर छुक्कु लगा कर वजामा गमा वाध्यतेर जो मुख्यतः गीड़वाड़ देव (सिरीही + जल्लौर + पाली) में समर दृष्टि करते समय धैर में पहना जाता है।

(xii) हॉकल :-

- ⇒ जीपों करा देवताओं की प्रसन्नन करने के सिर वजामा खाते वाला वाध्यतेर।

(xiii) बागरन्द :-

बागड़ दीन में अलीं छारा वजामा खाते वाला वाध्यतेर।

कीड़वाड़ देव

राज. की प्रथम लकड़ारी (लमोरी) - 1905, नियम, अल्पप्रदेश
प्रथम लकड़ारी दृष्टि - 1904, लमोर, अरतपुर

आभूषण

महिलाओं के आभूषण -

(1) सिर एवं महतक के आभूषण :-

stick - मैं सीटी घीर का ब्रिक्षा साफ़ि में खेता (इ)

मैं - मैं

मी - मीडिया, मीरगीड़ली

टी - टीका, टीकड़ी, टीकी, टिकुभलकी, तीव्हाढ़ी

घीर - घीरला

का - कास्तर

खब - खड़ी

ब्रिक्षा - ब्रिक्षाप्लू

सा - सोंकली

फि - फिरी

मैं - मैंदेव

गीफिं - बालों की बेड़ी मा लटों में गुचा जाने वाला आभूषण

मैर/मीड - द्वृष्टि - द्वृष्टि का मुकुट

मावती - महिलाओं के सिर की मांग का आभूषण

मन्दर - मांगटीका, गेंडी, धुंडी, चुडामन

(2) नाक के आभूषण -

stick - अँवर कारबी (इ) लोंग (एवं) वालु (इ) चौपं न् बेचूँ।

अँवर - अँवरा

चौपं - चौपं

का - काटा -

न - नथ, नथनी, नक्सर -

खी - खीवण

* छी - छेसर, छेसरी (छिजानगढ़ छीली) -

लोंग - लोंग -

द्वूँ - द्वूँती

वा - वारी -

तु - तुलाक

(3) कान के आभूषण -

stick - औलामा को दुरपि (इ) कर्णफूल ऊंग (एवं) लटी फटी को शमीला लजते हैं।

झी - औलियिमा

ठा - ठाली -

मा - मकड़ी, मकड़ी कडकम (पुकार), मीरफंकर

की - कीकी

सुर - सुरलिया

पि - पिपलफूल, पिपलपती, पती (सरंगाई) -

कर्ण - कर्णफूल -

झल - झलझुमका, झुमका, झुमर -

ओा - ओंगाईमा

लटी - लटकत -

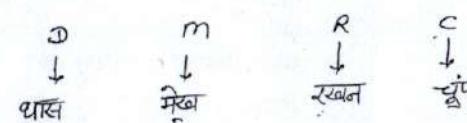
फ - फनझी

टी - टीप्स, टीटी -

झमिला - झमिला, झिला

अन्य आभूषण :- गुद्दी, तड़की, कुड़की, छैलकी, बारेठ, चूचालिया -

(4) ढोंग के आभूषण -



(5) गले के अनुप्रयोग -

- ✓ दुर्सी
- ✓ तुलसी
- ✓ चम्पाकली
- तिमिया, तातिया, पमिया
- मटगमला, मीठगमला
- पंचमियी
- मठली
- ✓ खटला
- हर
- रानीहर, हंसदहर, चक्कहर
- ✓ आड़
- ✓ हैमेल (बैखावारी क्षेत्र में)
- हंसली / हंसली
- खुगावली, खंगावली, पुणावली
- जंजीर
- नैकेस, नवकस

- * छालरी, ब्लालरी
 - मंगलसूत्र
 - * नणनामी
 - पीत-पारी
 - कंठी
 - लाग्ज, जन्तर
 - ✓ नावा (वातु से निप्रित देही की प्रतिकृति)
 - काला/ठला (सात देवियों की उभालित)
 - (प्रतिमा)
- अन्य:-
- ✓ मांदलिपी (पुकार)
 - रुचक
 - गिरीरी
 - गुलीबन्द
 - ✓ खैरियों

(6) हथ - थाणु - छेजा के अनुप्रयोग -

- | | |
|-----------------------|-----------------------------|
| कंकड़ा, कगान | विजायठ |
| नीतरी | कातरियी |
| हरपान (बाघ) | तकमा (बाघ) |
| नंकरतन | खूतड़ी |
| जाजरा (कलई एवं लाजु) | पद्धली |
| गीकक | दुगाड़ी |
| धूड़ा, धूड़ी, धूड़ | अणत (आरत) - (लाघु) |
| छंगड़ी | प्रूणय |
| मीखड़ी (जाख का झूड़ा) | माठी (पुलवों के हथ का कड़ा) |
| वल्लमा | खोच |
| ठड़ा (बाघ) | काऊरी |
| पापुकंक, बंद | कड़ा |
| | फूर्खना |

(7) हाथ की अंगुहियों के अनुप्रयोग -

- trick- हाथ में जड़ लीटी (ए) खाम (ए) अरकी (ए) कड़ (ए)
 - हाथ - हंडाहान
 - मे - मूढ़ी
 - अ - अमूठी
 - छ - छल्ला
 - वीटी - वीटी
 - दाम - दामना
 - झरसी - झरसी
 - घड - घड़ा
- (8) कमर के अनुप्रयोग -
- trick- उस में कर्धनी (सर्व) कर्द्दीरा कण ताङी (कहलाती है)
 - व - वर्सन
 - स - सरका
 - मे - मैखला
 - कर्धनी - कर्धनी

(9) पैर के अनुप्रयोग -

- trick- आशा मुमता (ए) पापल (ए) शुनु (ए) कूड़ी (ए) कीटी ला।
- आ - आवला (नेवरी के हथ)
- शा - शांझर
- म - माकिया
- म - मदूरियी
- ता -
- पापल - पापल, पैंजाणियाँ
- री - रीमहील / समझील
- कु - कुपु
- कड़ी - कड़ा

(10) पेर की अंगुष्ठियों के अक्षण -

trick - जीकी (अ) छेन पा फल (प्रयो)

जी - जीर, जीवा, गृह्णी

छी - विद्या, विचुड़ी (चुटकी)

ने - छोड़निया

पा - पापान

फल - फ़लरी / फीलरी

पुरुषों के अक्षण :-

(1) कनि - मुकियाँ, क्षाले, मादड़ी कड़कम, लेंग

(2) गला - कठी, रामनामी, चैन स्वं पेंडल, मादलिया

(3) हथ - कड़ा, माठी, वाजूबोद

(4) धेर - टीकर

(5) अंगुष्ठी - अंगुठी